સળંગ અંક ૫૬ ડિસેમ્બર - ૨૦૧૧

શ્રી સ્વામિનારાયણ

માસિક કિંમત ₹ ૫/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર દ્વારા આયોજીત
ઠોટેશ્વર અને અસારવા ગુરુકુળમાં બાળ-યુવા શિબિર,
યુવક મંડળ પ્રતિનિધિ શિબિર, મહિલા શિબિર અને
બાલિકા શિબિર ધર્મકુળની નિશ્રામાં સંપન્ન થઈ

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

૧. આંતરોલી ગામે સ.ગુ. સ્વામી જાનકી પ્રસાદદાસજી (પારાયણ પ્રસંગે) પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીનું પુષ્પહાર પહેરાવી સન્માન કરતા. અને સભામાં મુમુક્ષુઓને આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી ૨. અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં પારાયણ પ્રસંગે વ્યાસપીઠની આરતી ઉતારતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી સાથે યજમાનશ્રી કિલ્લોલભાઈ શેલત (એડવોકેટ). ૩. વસઝર મંદિરમાં ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી સાથે સ્વયંપ્રકાશ સ્વામી અને શાકોત્સવ કરતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી સાથે જે.પી.સ્વામી ૪. કોટેશ્વર ગુરુકુળમાં યુવક મંડળના પ્રતિનિધિઓને આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૫. માંડલ મંદિરના શતાબ્દી પાટોત્સવ પ્રસંગે પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીની નિશ્રામાં કથામૃત પાન કરાવતા પૂ. પી.પી.સ્વામી અને આશીર્વાદ લેતા યજમાનશ્રી. ૬. બાલવાના ૧૫૨ જેટલા વયોવૃધ્ધ સત્સંગીઓને ગામના યુવકોએ શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમના દર્શન કરાવ્યા તેની તસવીર.

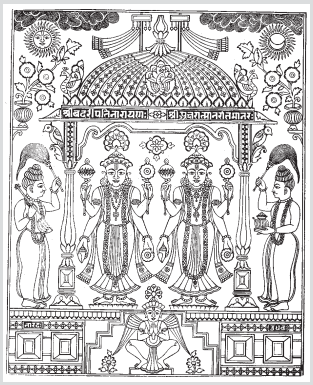

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ ● फेक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ५६ दिसम्बर-२०११

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०४.	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा आयोजित दीपावली अवकाश शिबिर स्थल : श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर	०४
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया-न्युझीलेन्ड का धर्मप्रवास	०६
०६.	महामुक्तराज श्री गोपालानंद स्वामीने मुमुक्षुओं के लिये औषधी दी थी	०७
०७.	श्रीहरि के साथ अंग्रेजो का तथा शहर के श्रेष्ठीजनों के साथ संवाद	०८
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१०
०९.	सत्संग बालवाटिका	१२
१०.	भक्ति सुधा	१५
११.	सत्संग समाचार	१९

अहम् दिवम्

इस संसार में अबजों की संख्या में मनुष्यो की वस्ती है। अभी अन्तिम समाचार के अनुसार विश्व की वस्ती सात अरब से ऊपर होने जा रही है। चीन जैसे देश में रहने की भी जगह नहीं रह गयी है। अपने भारत देश में तो इसकी समस्या अभी नहीं है। सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से हमें जगत का व्यवहार तथा आध्यात्मिक सुख इस तरह दोनो मिला है। जितना अधिक भजन होगी उतना ही सुख मिलेगा। इसका सदा ध्यान रखना चाहिये।

१६ दिसम्बर से पवित्र धनुर्मास का आरम्भ हो रहा है। प्रातः काल में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा धर्मकुल की उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की जायेगी। इस धुन का ऐसा प्रभाव है कि सभी भगवान में तन्मय हो जाते हैं। अहमदाबाद शहर में रहने वाले सभी हरिभक्त इस धुन का लाभ लेने के लिये अवश्य पधारते हैं। ऐसा अलौकिक सुख सारी दुनियां में कहीं नही मिलेगा। सम्पूर्ण धनुर्मास मे प्रातः काल भगवान के स्मरण में ही वीते ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना। नगर तथा ग्राम में रहने वाले सभी भक्तजन धुन का लाभ लेने अवश्य पधारें।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०११)

१. विहार गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२. गवाडा गाँव में श्री अंबालाल महेरदास पटेल के यहाँ पदार्पण।
३. आंतरोली गाँव में पाटोत्सव तथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर शिबिर प्रसंग में पधारे।
४. बावोल गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदाबाद में श्री विनोदराम गणपतराय शेलत साहब द्वारा आयोजित श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण के प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर सत्संग शिबिर में पधारे।
६. श्री सहजानन्द गुरुकुल कोटेश्वर प्रातः से सायं यावत् सत्संग युवा शिबिर में आशीर्वाद देने के लिये पधारे।
७. अहमदाबाद मंदिर में रंग महोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव, अभिषेक अपने हाथों से किये।
कुंडाल गाँव में श्री चन्दुभाई खोड़ीदास परिवार द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
८. श्री हर्षदभाई सोनी के यहाँ पदार्पण - नवरंगपुरा।
९. श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल मांडवी (कच्छ) पदार्पण।
१०. कडी गाँव में श्री कल्याणदास नारायणदास पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर पाटोत्सव अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।
१२ से २१ एडीलेट (इष्ट आफ्रिका केनिया) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर पदार्पण।
२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में २४ घन्टे तक अखंड महामंत्र धुन के प्रसंग पर पदार्पण।
२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२५. श्री नारायणभाई मिस्त्री (जीवराजपार्क वाला) द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग पर माथक (मूलीदेश) गाँव में पदार्पण।
२६ से २७ भचाऊ (कच्छ) पदार्पण।
२८. रामनगर (कलोल) गाँव में श्री अमृतभाई गणपतभाई लल्लुदास के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।
२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-१५ ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा आयोजित दीपावली अवकाश शिबिर स्थल : श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर

- शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)

द्वितीय श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल शिबिर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा और आशीर्वाद से तथा प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी, महंत नारायणघाट) के मार्गदर्शन से श्री नरनाराणदेव के आधिन श्री सहजानंद गुरुकुल, कोटेश्वर में दि. २-११-२०११ से दि. ३-११-२०११ तक दो दिन शिबिर का भव्य आयोजन हुआ था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा आयोजित श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग शिबिर में प्रथम दिवस सुबह ८ बडे ३५ गाँव से ४२५ बच्चे इस शिबिर में आये थे। प्रात: पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ शिबिर में पधार कर शिबिर का दीप प्राकट्य कर बालकों को कंठी तथा आये बच्चो में से ११६ बच्चो को पूजापेटी दी थी। बालको में सत्संग तथा संस्कार का सिंचन हो इस लिये शिबिर के दौरान तीन सत्संग सत्र रखे गये थे। जिस में स.गु. स्वा. विश्वस्वरुपदासजी आदि संतो ने पधारकर सत्संग, संस्कार तथा सभा से होने वाले फायदे पर प्रवचन दिया था। इस शिबिर में बड़े महाराजश्री पधारे थे और उनके सानिध्य में समूह आरती का आयोजन किया गया था। जिसका प्रसारण टी.वी. चेनलो पर लाईव किया गया था। बालको का सर्वांगी विकास हो ऐसे आसन से इनडोर गेम्स तथा आऊट डोर गेम्स का आयोजन किया गया था। जिसमें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को इनाम पू.महाराजश्री के करकमलो से दिया गया था। साथ ही साथ पू. लालजी महाराजश्री क्रिकेट भी खेले थे। अंतिम दिवस पर समापन के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री तथा स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद महंतश्री), स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट, महंतश्री) पधारे थे तथा समापन सभा में आये बच्चों के सभी परिवारजनो को आशिर्वाद दिये थे। पश्चात समूह भोजन हुआ था। इस सभा में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, अहमदाबाद की सेवा प्रसंशनीय रही तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, मोटेरा द्वारा तन, मन, धन से सेवा की थी। समग्र शिबीर का संचालन स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने संभाला था।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल प्रतिनिधिज्ञान शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा उनके अध्यक्ष स्थान पर नरनारायणदेव युवक मंडल जिस जिस गाँव में चलता है प्रत्येक गाँव से ३ सभ्यो की मर्यादा में प्रतिनिधियों की उपस्थिति रहने को कहा गया, तथा २५० प्रतिनिधिदो दिन, आजके समय में सही ज्ञान दे सके तथा प्रत्येक गाँव में सिद्धांत और समझ दे सके एसे शुभ आसय से उपस्थित रहे थे। पू. आचार्य महाराजश्री दोनो दिन सुबह से शाम तक उपस्थित रह कर सुंदर मार्गदर्शन दिये थे।

दोनो दिवस संप्रदाय तथा समाज के विद्वान लोगो ने अपने ज्ञान का लाभ युवानो को दिया था। प्रथम दिवस परम पू. निर्गुण स्वामीने (सांप्रदायिक समस्या पर) तथा पश्चात् रामकृष्णदासजी तथा पू. छोटे पी.पी. स्वामीने (संचालन व्यवस्था) पर सुंदर समझ सभी प्रतिनिधियों को दी थी। पू. महाराजश्री भी सुबह से शिबिर में दर्शन देने पधारे थे। शाम के समय सभी प्रतिनीधिके साथ प्रसादी लेकर कोटेश्वर महादेव के दर्शन करके पधारे थे। संध्या आरती की सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु.शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी पधारकर सभी युवानो को आशीर्वाद दिये थे। सबसे सुंदर अवसर रात की प्रश्नोत्तरी का था। पू. महाराजश्रीने युवानो को परेशान करने वाले प्रश्नो का स्वयं जवाब देकर वचनामृत की सभा की याद दिलायी थी। युवान भी यह अवसर पाकर

धन्य हुये थे । दूसरे दिन भी प्रात- के सत्र में सुरेशभाई गांधीने 'संगठन' विषय पर श्री उदयनभाई महाराजाने ''जागृत कार्यकर्ता'' पर तथा पू. बड़े पी.पी. स्वामीने ''हरिमंदिर विवेक'' विषय पर सुंदर ज्ञान दिया था । दूसरे सत्र में पू. छोटे पी.पी. स्वामीने सभी युवानो के प्रश्नो के उत्तर तथा जागृत होकर समझपूर्वक भक्ति सत्संग करने के शुभ आशीर्वाद दिये थे ।

दो दिन तो पलभर में बीत गए ऐसा सभी को लगा था । और ऐसा शिबिर प्रदेश-प्रदेश में हो तो अधिक भक्तो को लाभ प्राप्त होगा ऐसी प्रार्थना भी लोगो की महाराजश्रीने स्वीकारी थी । दोनो दिन पूर्ण समय तक पू. महाराजश्री की उपस्थिति तथा उनके दर्शन-आशीर्वाद का सबसे बड़ा लाभ था । संपूर्ण आयोजन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा किया गया था । जिसमें व्यवस्था के सहयोगी श्री नरनारायणदेव युवक मंडल अहमदाबाद तथा मोटेरा के हर्षदभाई आदि युवानोने खूब सेवा की थी । शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (छोटे पी.पी. स्वामी, पू. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) तथा पू. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) ने अच्छा मार्गदर्शन दिया था ।

श्री नरनारायणदेव महिला तथा बालिका मंडल शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री और पू. श्रीराजा के सानिध्य में ८-११-२०११ से ता. ९-११-२०११ पर्यंत दो दिन तक महिला मंडल तथा बालिका मंडल शिबिर का आयोजन किया गया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अयोजित श्री नरनारायणदेव महिला मंडल तथा बालिका मंडल शिबिर में प्रथम दिवस पर सुबह ८-३० बजे गाँवो में से करीब २०० महिलाए तथा २५० बालिकाए शिबिर में भाग लेने पधारी थी । सुबह रजिस्ट्रेशन के पश्चात् पू. गादीवालाश्री शिबिर में पधार कर दीप प्राकट्य करके उत्साह बढाया । महिला मंडल तथा बालिका मंडल की सभा अलग-अलग की गई थी । पश्चात् महिला मंडल की सभा में पधारी त्यागी बहनोने शिबिर पर प्रवचन दिया था । पश्चात् सभीने साथ में भोजन लिया था । बालिकाओं के लिए रंगोली डेकोरेशन स्पर्धा का आयोजन किया गया था । पश्चात् सभी शिबिरार्थी ३-३० को कोटेश्वर महादेव दर्शन करने गये थे । जहाँ दोनो अलग-अलग समूह में अंताक्षरी खेले थे । शाम को ५ बजे बालिकाओं की सभा में श्रीराजा पधारी और उनके सानिध्य में, वन मिनट गेम चित्र स्पर्धा आदि खेला हुए और विजेताओं को श्रीराजा के करकमलो से इनाम दिया गया । दूसरी तरफ महिला मंडल की सभा में त्यागी बहनो द्वारा सत्संग समस्या, मंदिर में विवेक, मंदिर का ममत्व आदि विषयो पर प्रवचन दिये थे । शाम ७ बजे श्री घनश्याम महाराज की समूह आरती कर भोजन ग्रहण किया गया था । रात को सांस्कृतिक कार्यक्रममें (ताल ओरकेस्ट्रा) पूरवभाई पटेलने रास गरबा का आयोजन किया जिसमें सभीने भाग लिया था ।

दूसरे दिन सुबह के सत्र में बालिका मंडल द्वारा महेंदी स्पर्धा का आयोजन किया गया था । पश्चात् त्यागी बहनो द्वारा संस्कार के सिंचन पर सुंदर प्रवचन किया गया था । महिला मंडल की सभा में बहनोने, पूजा, कंठी की महिमा तथा श्री नरनारायणदेव की महिमा आदि विषयो पर प्रवचन दिया था । पश्चात् पू. गादीवाला का भी लाभ उन्हें मिला था । पश्चात् भोजन हुआ और विराम के पश्चात् दोनो मंडल की समूह सभा का आयोजन हुआ । जिस में कई त्यागी बहनोने श्रीहरि तथा धर्मकुल के महिमा की बात की थी । पश्चात कंठी पहनाकर और पूजा पेटी लेने की उत्सुक शिबिरार्थी बहनों को पू. गादीवाला के हाथो कंठी पहेराई गई तथा पूजापेटी दी गई । पश्चात् समस्याओं की प्रश्नोतरी रखी गई । जिस के उत्तर पू. गादीवालाश्रीने देकर समस्या दूर की थी । अंत में पू. गादीवालाश्रीने प्रत्येक शिबिरार्थी को शिबिर में भाग लेने के लिए धन्यवाद के साथ आशीर्वाद दिये थे । बालिका की प्रथम शिबिर होने की वजह से स्मृति के लिए आईपेड दिये गये थे इस शिबिर में कालुपुर, विसनगर, प्रांतिज, जेतलपुर आदि धामो से पधारी हुई त्यागी बहनोने भी प्रवचन दिया था । इस शिबिर में श्री नरनारायण युवक मंडल बापुनगर की सेवा प्रसंशनीय थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया-न्युझीलेन्ड का धर्मप्रवास

- राम स्वामी (कोटेश्वर)

भगवान स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया में सत्संग विश्व व्यापी हो गया है । देश विदेश में रहने वाले हरिभक्तों के विशेष निवेदन पर पदार्पण करते रहते हैं । ता. ६-१०-११ से २३-१०-११ तक पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ जिस में पू. पी.पी. स्वामी, राम स्वामी, पार्षद वनराज भगत साथ में आष्ट्रेलिया एवं न्युझीलेन्ड पधारे थे ।

सर्व प्रथम पू. महाराजश्री यहाँ से पर्थ पधारे थे । पर्थ में सत्संग खूब फूलाफला है । सभी हरिभक्तों ने पू. महाराजश्री का एरपोर्ट पर ही बड़े धूमधाम के साथ स्वागत किया था । पर्थ में प्रभु की कृपा से थोड़े समय पूर्व मंदिर के लिए ४ एकड़ जमीन प्राप्त की गयी थी । इस जगह पर मंदिर निर्माण की शिलान्यास विधिपू. महाराजश्री तथा पू. भुज मंदिर के महंत स्वामी के वरद् हाथों से की गयी थी । इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन भी किया गया था । रवजीभाई हालाई तथा समिति के सदस्य पू. महाराजश्री की आज्ञा से नूतन मंदिर का निर्माण कार्य हुआ । पू. महाराजश्री सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये ।

एडीलेड में पू. महाराजश्री की आज्ञा से करीब पांच वर्ष पूर्व सभा का आरंभ किया गया था । उसे पांच वर्ष पूर्ण होते ही पू. महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम के साथ पंचाब्दी उत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक सत्संगिजीवन की कथा की गयी थी । सभी युवान तन, मन, धन से सेवा में लगे रहे । पू. महाराजश्री सभी भक्तों की सेवा भक्ति देखकर खूब प्रसन्न हुये और सभी को हार्दिक आशीर्वाद भी दिये ।

यहाँ से मेलबोर्न पधारे, जहाँ पर महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया । मेरबोर्न के रींग वुड विस्तार में अपना मंदिर तैयार होरहा है । ता. २४-१-१२ से २८-१-१२ तक भव्य मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया जायेगा । पू. महाराजश्री ने मंदिर का कार्य देखकर बहुत प्रसन्न हो गये । अलग-अलग विस्तारो में महाराजश्री ने पदार्पण किया । जहाँ जते वहाँ पर सत्संग सभा का आयोजन किया जाता । वहाँ के भक्तों को नियम में रहने का आशीर्वाद देकर न्युझीलेन्ड पधारे थे ।

न्युझीलेन्ड में तीन दिन तक अनेकों हरिभक्तों को दर्शन का तथा आशीर्वचन का लाभ दिये थे । अपने मंदिर में प्रतिदिन सायंकाल साभ होती तथा सत्संग का कार्यक्रम होता । छोटे बाल मंडल की प्रवृति देखकर पू. महाराजश्री बहुत प्रसन्न हुये थे ।

१ दिन का सत्संग पिकनिक का भी आयोजन मंदिर द्वारा किया गया था । वृद्ध, युवान, बालक सभी बड़े उत्साह के साथ शिबिर में सहभागी हुये थे । पू. महाराजश्री के सानिध्य में ऐसे दिव्य समय बीताने के अवसर मिले जीवन कृत कृत्य हो गया । सभी भक्तों को प्रसन्न करके सभी से भावभीनी बिदाई लेकर स्वदेश पधारे थे ।

श्री नरनारा?णदेव गादी देश में श्री स्वामिनारायण गुरुकुल सिध्धपुर का सामावेश हुआ है

श्री स्वामिनारायण गुरुकुल सिद्धपुर में ट्रस्ट के मेनेजींग ट्रस्टी की ट्रस्ट के अधिनियम में श्री नरनारायणदेव देश के गादी के आचार्य महाराजश्री को लिया गया है । तदुंपरात ता. ६-११-२०११ श्री स्वामिनारायण गुरुकुल सिद्धपुर में ट्रस्ट की मिटींग में अधिनियम नं. १५२ से श्री नरनारायणदेव देश की स्कीम कमेटी के एक सदस्य को ट्रस्ट में ट्रस्टी के रुप में समाविष्ट करने की सत्ता प.पू.ध.धु. १००८ श्री आचार्य महाराजश्री को दी जा रही है ।

- आज्ञा से

महामुक्तराज श्री गोपालानंद स्वामीने मुमुक्षुओं के लिये औषधी दी थी

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

अमृत का सागर गोपालानन्द स्वामी को कहा जाता था । जिस तरह पारसकी मणी के स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है उसी तरह गोपालानन्द स्वामी के योग से अनेक मुमुक्षु मुक्ति की स्थिति को प्राप्त किये थे । साबर कांठा जिले के भिलोड़ा गाँव के नजदीक टोरडा गांव में स्वामी का जन्म हुआ था । सम्वत १८३३ श्रावण शुक्ल-१५ को हुआ था । पिताजी का नाम मोतीराम राजेश्वर ठाकर तथा माता का नाम जीवीबा था । ये दोनो भगवान के परम भक्त थे । स्वामी के बाल्यकाल का नाम खुशाल था । इनके बाल्यकाल में भी बड़ी चमत्कारीक घटना हुई थी । जीवन बड़ा सुखी था । सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के संकल्प से उनके भीतर ऐश्वर्य स्वतः सिद्ध थे ।

बाडाशिनोर के काशीराम तथा मुरलीधर नाम के सत्संगियों से भगवान स्वामिनारायण के प्रगटपना को जानकर दर्शन की उत्कट इच्छा हुई । उसी समय महाराज की आज्ञा से रामानन्द स्वामी के शिष्य खुशालभाई महाराज के पास डभाण आये । श्रीहरि का दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुये । श्रीहरि की आज्ञा से वे पुनः अपने घर वापस गये । जब महाराज जेतलपुर पधारे तब ब्राह्मण के वेश में श्रीहरि पुनः उन्हे स्वयं लेने गये । श्रीहरि का दिव्य दर्शन होते ही मन की वृत्ति उन्हीं में लग गयी । सदा के लिये वे गृह त्याग करके सं. १८६४ में गढडा दादा खाचर के दरबार में अक्षर ओरडी में महाराज ने खुशाल को भगवती दीक्षा देकर गोपालानन्द स्वामी नाम रखे । मुमुक्षुओं के मोक्ष के लिये गोपालानंद स्वामी ने ध्यान, भक्ति, उपासना, भगवान के निश्चय की वाते, अखंड ध्यान त्यागी को किस तरह रहना चाहिये ? विषय का खंडन, हृदय से वासना किस तरह निकाली जाय, अपने स्वभाव में किस तरह परिवर्तन हो, वैराग्य पूर्वक किस तरह रहा जाय, परमज्ञानी कैसे हों, इस तरह की अद्‌भुत मोक्ष प्रद वातो को स्वामीने संप्रदाय के लिये औषधीके रुप में अर्पण किया है इसलोक में तथा परलोक में दोनो श्रीहरि का स्वरुप यथार्थ है ऐसा समझाया है । इस तरह करने से विश्वास उत्पन्न होगा । पुरुषोत्तम भगवान को समझने के लिये स्वामीने बताया है कि ''जिस तरह रामकृष्णादिक भगवान की मूर्तियां हैं उन सभी में स्वरुप, गुण, स्वभाव, विभूति, ऐश्वर्य, प्रकाश, शक्ति, अवतार सभी में थोडा बहुत अन्तर है । श्रीहरि में इस से भी विलक्षण बताया गया है ।

मुक्त सात प्रकार के है - देवलोक के, वैकुंठ के, बद्रिकाश्रम के, श्वेत द्वीप के, गोलोक के तथा अक्षरधाम के । श्रीजी महाराज के महत्व को समझाते हुये स्वामीने कहा है कि जिस तरह सोने के साथ कंकण-पत्थर रखा हो लेकिन मन सोने की तरह ही आकृष्ट होगा । इसी तरह जिसका मन श्रीहरि में आकृष्ट हो गया हो उसका मन सांसारिक विषयों में आसक्त नहीं होता ।

आत्म विचार करने से आत्म निष्ठा दृढ होती है । उन्हों ने ऐसा वर्तन किया है कि हमारी शरीर हजारो लाखों शरीर धारण करने के बाद प्राप्त हुई है । जिस तरह मनुष्य पुराने कपड़े को त्याग करके नूतन वस्त्र धारण करता है ठीक उसी तरह जगत में मा-बाप, सगा सम्बन्धी सभी अज्ञान के कारण मानते है । मैं शरीर, मन, इन्द्रिय, अन्तःकरण से अलग हूँ । इस तरह आत्म विचार करना चाहिये । भक्त चिन्तामणी ग्रन्थ में लिखा है कि सं. १८८६ में श्रीहरि का अन्तर्धान हुआ उसके २२ वर्ष के बाद तक अपने स्वरुप की दृढता करने के लिये विद्यमान रहे । उन्होंने उपनिषद भाष्य ब्रह्मसूत्रार्थदीप, श्रीमद् भगवद् गीता भाष्य, वेद स्तुति की श्रुतबोधिनी टीका, शाण्डिल्य सूत्र की भक्ति प्रकाशिका टीका तथा शिक्षापत्री का मराठी भाषा में भाषांतर भी किया गया है ।

श्रीहरि के साथ अंग्रेजो का तथा शहर के श्रेष्ठीजनों के साथ संवाद

- जयंतीलाल के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

श्री स्वामिनारायण के संत भद्र के विस्तार में भिक्षा मांगते हुये नारायण हरि सच्चिदानंद प्रभो'' बोलकर खड़े हो गये । मस्तक झुकाकर खड़े रहे और महिलाये झोली में भिक्षा डालकर चली गयी, लेकिन इस दृश्य को अंग्रेज एरंड साहब देख रहे थे । उनके मन में विचार आया कि ए संत कौन हैं जो महिलाओं की तरफ विना देखे भिक्षा लेकर चले गये । अपने साथ कुबेरसिंहके बड़े भाई मोती राम से पूछे कि ये साधु किसके है उन्होंने बताया कि ये स्वामिनारायण के साधु है । साहब ने कहा स्वामिनारायण कहाँ रहते हैं ? उन्हें इस शहर में लाना है - इसके लिये संप्रदाय के अग्रगण्य सत्संगियों को बुलवाकर कहा कि हम स्वामिनारायण को शहर में लाना चाहते हैं इससे किसी को विरोधहो तो अभी कहदे अन्यथा पीछे से कहने वाले को दंड दिया जायेगा । यह सुनकर कोई नहीं बोला लेकिन साहब का सेक्रेटरी पूंजा शाह ने कहा कि साहब ये तो पुरुष को स्त्री से तथा स्त्री को पुरुष से अलग करके त्यागी बनादेते हैं इसलिये यहाँ बुलाना ठीक नहीं । साहब ने कहा कि - तुम अभी विवाह किये हो और तुम मेरे नौकर हो तो क्या मेरे कहने से अपनी पत्नी को छोड़ दोंगे । इसलिये इस पर कोई चर्चा नहीं करनी है । अभी उन्हें यहाँ बुलाना है उन्हें तुम नही समझपाया है इसलिये ऐसा कह रहा है । उसी समय महाराज को बुलाने के लिये नथु भट्ट, दामोदर पटेल, हिराचंद चोकसी, कुबेरसिंह चोपदार तथा लालदास गोरा को महाराज के पास भेंजा । इन सभी के साथ एक पत्र भी लिखा कि आप यहाँ पधारें आप की सुरक्षा की तथा स्वागत की उचित व्यवस्था की जायेगी । उन दिनों महाराज गढपुर में विराजमान थे. सभी महाराज के पास जाकर एरंड साहब की बात बताये और एरंड साहब के भावात्मक पत्र को दिये । महाराज उसी समय मुक्तानंद इत्यादि संतो को बुलाकर उस पत्र को पढवाते है और कहते है कि अहमदाबाद के लिये सरकार हमें बुला रही है इसलिये वहाँ जाना है । महाराज मयाराम भट्ट को बुलाकर श्रीनगर जाने के लिये मुहूर्त निकलवाते है . सभी को साथ लेकर जेतलपुर पधारे । वहीं पर रात्रि विश्राम के बाद प्रातः अहमदाबाद कांकरिया तालाब के पास पधारे । वही पर साहबने गाजेबाजे के साथ स्वागत करके महाराज को अपने ऊपर बीती एक कहानी सुनाते हैं - एक बार मैं जंगल में धूमने गया था । मेरे साथ सैनिक भी थे । मैं हाथी पर सवार था । सामने एक वाघ दिखाई दिया मैंने उसके ऊपर गोली चलादी लेकिन संयोग वश उसे गोली नहीं लगी । वाघ मेरे ऊपर आक्रमण कर दिया । मैं हाथी के हौदे पर बैठा था वहाँ तक उसकी छलांग देखकर इतना डर गया कि दूसरी गोली चला ही नही सका । उसी समय मुझे कोई अदृष्ट मूर्ति वहाँ आयी और आकाश में लेकर चली गयी । इतने में मेरे सैनिक उस वाघ को मारडाले । पुनः अदृष्ट शक्ति मुझे हाथी के हौदे पर रख गयी । उसी समय से उस दिव्य मूर्ति की खोज करता हूँ लेकिन आज तक उसका पता नही लगा । आज आप मुझ पर कृपा करके स्वयं साक्षात् जिस रुप की खोज की दर्शन देने के लिये पधारे हैं ।ऐसा कहकर अपने मस्तक से टोपी उतारकर कहा कि आप इस ख्रिस्ती से भी धन्य है । कारण यह कि जब मैं आपत्ति में था तो इशु ख्रिस्ती को खूब प्रार्थना किया लेकिन वे बचाने नही आये । आप विना प्रार्थना के मेरी रक्षा किये । इस लिये आप सभी के कारण है । दूसरे साहब ने कहा कि आप अल्ला हैं तो विलायत में मेरा स्थान कहा है ? और कैसे चित्रित करके बताइये । सभी साहब यह देखकर प्रसन्न होकर कहने लगे कि आप साक्षात् अल्ला है ।

बाद में डनलोप साहब ने कहा कि यदि आप साक्षात् भगवान हैं तो और कुछ आपसे अज्ञात नहीं है तो आप यह बताइये कि हमारे किस पुण्य का फल है कि जो आप साक्षात् मिले । महाराज ने कहा यह कहानी बहुत लम्बी है । लेकिन संक्षिप्त में कहता हूँ । आप का युरोप नाम का

खंड है। उसमें ग्रीस देश है। उस देश में मध्यम परिवार में आपका जन्म हुआ। वहाँ का राजा बलवान था। वह अन्य राज्यों को जितने की तैयारी किया और आपको होंशियार समझकर सेना से सेनापति बना दिया। एकबार किसी राजा के साथ युद्ध हुआ उस समय राजा ने आपको आदेश दिया कि जब सामने की सेना शयन करती रहे उस समय सारी सेना का कतल कर देना। राजा का इस तरह अन्यायी, अत्याचारी आदेश सुनकर आपके मन में विचार आया कि ऐसे भयंकर पाप करने की अपेक्षा नौकरी छोड़ देना ठीक है। आपने ऐसा ही किया। आयुपूर्ण होते शरीर छूट गयी।

दूसरे जन्म में किसी पुण्यात्मा ज्योतिषी के घर में जन्म हुआ और स्वंय भविष्य वेत्ता हुए है जर्मन में वहां के राजा ने समस्त यूरोप खंड के राजायों को तथा पंडितो को एकत्रित किया उसमें आप भी गये हुये थे। वहाँ पर आप शास्त्रार्थ में अन्य सभी को पराजित करके स्वयं सबसे बड़े पंडित के रुप में प्रतिष्ठित हुए। उस जन्म में भी पूर्ण आयु भोग कर शरीर त्याग किये।

तीसरे जन्म में फ्रांस में एक पादरी के घर में पैदा हुए। वहाँ पर खूब अभ्यास करके, इशु ख्रिस्त के ग्रन्थो का अध्ययन करके खूब अच्छे धर्मज्ञ हुये। वहाँ के लोग मदिरापान, पापाचार, क्रूराचार में समय विताये थे। उसी में सुख मानते थे। ऐसे दुष्टों को सदुपदेश करके अच्छी दिशा दिये। देवालय बनवाये, सत्कार्य में समय बिताते हुए तीसरा जन्म भी पूरा किये। चौथा जन्म अमीरघर में हुआ। छोटी उम्र में अभ्यास करके राजकारण मे लग गये। आपकी योग्यता देखकर सेनापति बना दिया गया। बाद में हिन्दुस्तान को जीतने के लिये यहाँ भेज दिया गया। यहाँ पर प्रथम आपने हिन्दुस्तान में बंगाल कोजीता। बाद में सूरत इत्यादि देशों को जीतने के बाद पेश्वा सरकार को हटाकर अहमदाबाद शहर को अपने कब्जे में ले लिये। आपका प्रत्येक जीवन धार्मिक था। दु:खी लोगो के दर्द को समझना तथा संतो की सेवा करना आपका भाव था। इसी पुण्य के प्रभाव से हमारा दर्शन आपको हुआ। यह सुनकर दुर्लभ साहब तथा अन्य सैनिक श्रीहरि के ऊपर खूब प्रसन्न हुए और भगवान पना का यथार्थ ज्ञान हुआ।

कांकरिया सरोवर की सभा में विराजमान अंग्रेज अधिकारी के साथ बात कर ही रहे थे कि सत्संगियों में अग्रगण्य तथा बड़े-बड़े संत एवं नगर के मानित श्रेष्ठीजन अपने-अपने साधनो से वहाँ उपस्थित हुये। प्रत्येक जन प्रथम श्रीहरि को साष्टांग प्रणाम करके पुष्पमाला की चरण में भेटं कर रहे थे। बाद में सभी से हाल समाचार पूछते थे। हिमाभाई शेठ ने महाराज से कहा कि प्रभु आपके मतानुसार निष्काम व्रत ही श्रेष्ठ है ऐसा लगता है। जो भी आपकी शरण में आता है वही आपके प्रताप से निष्कामी हो जाता है। हिमाभाई शेठ अहमदाबाद के सबसे बड़े धनी थे। इसके साथ ही वे समाज की सेवा में लगे रहते थे। स्वयं जैनी थे। जैन मंदिरों का निर्माण कार्य करवाये थे। धर्मशाला, गौशाला इत्यादि बहुत सारे धार्मिक कार्य में प्रवृत्त रहते थे। इनकी माताजी श्रीहरि को सोने का फूल भेंट करके स्वागत की थी।

इस तरह शहर के कितने सत्संगी श्रीहरि को अपने घर पदार्पण करवाये थे। सायंकाल नित्यकर्म के बाद सभी के साथ प्रभु की आरती करके नारायण की धुन करने लगे। उस समय श्रीहरि के स्वरुप से तेज प्रगट होने लगा। यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। जब धुन बन्द हुई तो वह तेज महाराज के शरीर में समा गयी। उस समय सभी को यह निश्चित होगया कि श्रीहरि साक्षात् भगवान है। इस तरह सभी को वात करते देखकर महाराज ने पूछा कि आप लोग क्या बात कर रहे है ? प्रभु ने कहा कि जब हम ध्यान में बैठे थे उस समय हम आप सभी के साथ अक्षरधाम गये थे। वहीं पर आप सभी को यह दिव्य दर्शन का लाभ मिला। अनेक देव हमारी पूजा करने पधारे थे। यह सुनकर सभी को श्रीहरि में भगवान पना का यथार्थ ज्ञान हो गया। जो तेज था वह प्रभु की मूर्ति का ही था। ऐसा निश्चय यदि हमारे जीवन में हो जाय तथा प्रभु की मूर्ति में आत्मनिष्ठा हो जाय तो जीवन की चरितार्थता है। प्रभु की मूर्ति में जो आनन्द है वह अन्यत्र संभव नहीं है। परम पद की चाहना वाले श्रीहरि के चरण की शरण ले एक मात्र वे ही परमपद के दाता है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के उद्घाटन हुये नव मास जितने हो गये । प्रतिदिन देश विदेश से अनेको दर्शनार्थी आते हैं । जिसमें अनेक संत, धार्मिक महानुभाव दर्शन करके धन्यता का अनुभव करते हैं । हम प्रति महीने आगंतुको के अभिप्राय को वांचते है । इससे ख्याल आता है कि श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन करने वालों को कैसा कैसा अनुभव होता है यह स्वयं आने पर ख्याल आयेगा । यह यदि समझ में आ जाय तो मोक्ष के इस धारा में जो भी डूबेगा उसे अवश्य आत्मिक शांति मिलेगी ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली

रु. २५,०००/-	प्रविणभाई कांतिभाई पटेल शिकागो । दक्षिका बहन प्रविणभाई पटेल
रु. २१,०००/-	बाबुभाई मावजीभाई पटेल - हरिकृष्ण मोजेक-मोरबी वती मनोज तथा हितेश ।
रु. २१,०००/-	यशभूमि कन्ट्रक्शन प्रा. लि.कं. अमदावाद ।
रु. ११,०००/-	अ.नि. प्रभावतीबहन रमणीकलाल सोमाणी तथा अ.नि. रमणीकलाल कालीदास सोमाणी के स्मरणार्थ सप्रेम भेट नवीनचंद्र सोमाणी, गढावीवाला-अहमदाबाद ।
रु. ११,०००/-	स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजीने पारायण के प्रसंग पर आत्रोल सत्संग मंडल द्वारा दिलवाया था ।
रु. ११,०००/-	शामलभाई मथुरभाई पटेल परिवार - वावोल ।
रु. १०,०००/-	पूनमभाई पटेल - अहमदाबाद ।
रु. १०,०००/-	हरजीभाई मावजीभाई हीराणी- सुखपुर-भुज
रु. १०,०००/-	अ.नि. मंगलाबहन ठक्कर के स्मरणार्थ अहमदाबाद ।
रु. ७,६०१/-	घनश्याम हिमवंतभाई मिस्त्री, सर्विस मिलते ही उनके संकल्प के अनुसार प्रथम वेतन भेंट किये ।
रु. ७,१००/-	सोमदास शिवसा (निकोल-नरोडा) ।
रु. ६,०००/-	विनेश सापरिया - मुंबई ।
रु. ६,०००/-	प्रतिभाबहन मारु ।
रु. ५,१११/-	हसुमतीबहन कन्हैयालाल भावसार - साणंद ।
रु. ५,१००/-	माणेकलाल सोना चांदी के एसोसीएशन - अहमदाबाद-संजयभाई सोनी
रु. ५,००१/-	खटाणा लालजीभाई मोहनभाई - बडोल ।
रु. ५,०००/-	असीत सापरिया - मुंबई ।
रु. ५,०००/-	डॉ. हरिकृष्णभाई गोकलभाई पटेल - सापावाडा ।
रु. ५,०००/-	ईश्वरभाई डुंगरशीभाई पटेल मेडावाला, हर्षद कोलोनी ।
रु. ५,०००/-	मधुबहन ईश्वरभाई डुंगरशीभाई पटेल ।
रु. ५,०००/-	वासुदेवभाई कानजीभाई पटेल - बोपल ।
रु. ५,०००/-	नारणभाई गोकलदास पटेल - सापावाडा
रु. ५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर पवई (मुंबई) वसीभाई ।
रु. ५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वणझर - रमणभाई ।
रु. ५,०००/-	महेशभाई एस. पटेल लालोडावाला - वापी ।
रु. ५,०००/-	दैवियानी हरिकृष्ण पटेल - कणभा ।
रु. ५,०००/-	हिरेन प्रागजीभाई कथरोटिया - बापूनगर ।
	प्रसादी के जल के बोपल के यजमान - भास्कर पेक कडी विवेकभाई, मयूरभाई, रोहितभाई - अहमदाबाद ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची

ता. १-११-११	प.पू. बड़ी गादीवालाश्री की प्रेरणा से कच्छ-भुज की सां.यो. बहनें तथा कालूपुर मंदिर हवेली की सां.यो. बहनों की तरफ से मंजुबा तथा भारती बा ।
ता. ३-११-११	सोमदास मोहनदास परिवार - वडु कृते मणीभाई सोमदास पटेल ।
ता. ४-११-११	श्री स्वामिनारायण मंदिर महिला मंडल, एप्रोच बापूनगर, रुपम बहन ।
ता. ५-११-११	जयेशभाई मंगलदास गज्जर, राजेन्द्रकुमार बाबूलाल गज्जर, अहमदाबाद ।
ता. १०-११-११	जयश्री बहन मनोजभाई दलाल, मनोजभाई घनश्यामभाई दलाल, तेजेन्द्रभाई मनोजभाई दलाल, नवा वडज ।
ता. २०-११-११	लालजीभाई गणेशभाई - भाऊपुरा - कृते जयेश, विपुल, व्रज, लीलाबहन ।
ता. २३-११-११	अ.नि. चन्द्रकान्तभाई अमीन अमदावाद कृते महेन्द्रभाई विमलभाई तथा शीतल बहन ।

नोट :ता. १०-१२०११ शनिवार पूनम को चन्द्रग्रहण होने से म्युजियम का दर्शन सायंकाल ४-०० बजे तक खुला रहेगा ।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

अभिप्राय

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

जयश्री स्वामिनारायण - वृद्धावस्था में जीवनभर श्री नरनारायणदेव के मार्ग में अडिग निष्ठा रखने वाले तथा सनातन मूल गादी के वफादार रहने वाले धरमपुर गाँव के अ.नि. पटेल रामजीभाई अमरशीभाई वकील की वयोवृद्ध धर्मपत्नी नानी बहन ९५ वर्ष की वृद्धावस्था में श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन करके घर बैठे गंगा में स्नान जैसा आनंद प्राप्त की । श्रीजी महाराज की प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन में बड़ी सरलता से श्रीहरि का दर्शन होता है । इस तरह की आत्मशांति मिलती है । इस तरह दिव्य दर्शन करके बड़े प्रेम के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प का स्मरण करके खूब आनन्दित हुई ।

- कंचनबहन आर. पटेल तथा भांजी उर्मिला-नारणपुरा

•

यह स्वामिनारायण म्युजियम अति सुंदर है । यहाँ पर प्रभु की प्रसादी की जो भी वस्तुयें है, उनका दर्शन करके आनंद की सीमा नहीं रहती । रु. नं. ९ में पिक्चर के स्वरुप में स्वामिनारायण भगवान का जन्म तथा उनकी कृपा का ध्यान रखा गया है । जो व्यक्ति एकबार भी यहाँ आता है वह दूसरी बार भी आने की इच्छा रखता है । सहीरुप में यह म्युजियम पृथ्वी पर अलौकिक तथा ऐतिहासिक स्थल है । यहाँ की जो व्यस्था है वह सराहनीय है ।

- उर्वी पटेल

•

इस प्रसादी की म्युजियम का दर्शन करने वाले बड़े भाग्यशाली है । जिनका पूर्व का पुण्य हो वही यहाँ आने की चहाना रखेगा । यह अक्षरधाम का द्वार है । हमें जो भी अनुभव हुआ है उससे अति आनन्द हुआ है - इसके लिये हम पूज्य बड़े महाराजश्री के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन तथा धर्मकुल के चरणों में कोटि कोटि वन्दन करते है ।

- किशोर हिराणी, नाइरोबी

•

हम इन प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करके आनन्द की अनुभूति का वर्णन करने में असमर्थ हो रहे हैं. सम्पूर्ण सत्संग समाज पू. बड़े महाराजश्री का ऋणी है । हम सभी का बड़ा पुण्य है जो कि इन प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन का अलभ्य लाभ मिला ।

- चेतन सोनी, यु.एस.ए.

•

श्रीनगर (अहमदाबाद) के बीच में ऐसी अलौकिक महाप्रभु के प्रसादी की जो वस्तुये म्युजियम में रखी गयी है, वे अमूल्य है । क्योंकि इन वस्तुओं को स्वयं श्रीहरिने अपने शरीर से स्पर्श किया था । स्पर्श होने से ये सभी वस्तुयें निर्गुण हो गयी है । ऐसे सर्वोपरि म्युजियम को देखने के लिये गाँव के वृद्धों को दर्शन कराने के लिये श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने अच्छा प्रयास किया था । आगन्तुक दर्शनार्थी उन वृद्धों के मुख से एक ही आवाज निकल रही थी कि वाह महाराज हे पूज्य बड़े महाराजश्री आपके इस उपकार के बदले में आपके चरणों में कोटि-कोटि वंदन तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी को भी हम वन्दना करते हैं ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, बालवा (गांधीनगर

•

म्युजियम का दर्शन करते हुये मुख में से एक ही शब्द निकला कि अद्‌भुत, अद्‌भुत, अद्‌भुत..... बोटाद में अद्‌भुतानंद स्वामी पधारे, प्रभु की आज्ञा थी कि आज्ञा विना दर्शन के लिये नहीं आना । स्वामी पूजा करने बैठे, पूजा में से प्रभु की प्रसादी के एक टुकड़े को स्वामीने अपने आंख से लगाकर मस्तक पर लगाये उसी समय हमीर खाचर को हुआ कि ओह ! वस्त्र की इतनी महिमा तो प्रभु कैसे होंगे ? हमीर खाचर को प्रभु का निश्चय हो गया । इन सभी प्रसादी की वस्तुओं का जो दर्शन करेंगे तो उन्हें प्रभु में निश्चय ही आत्मप्रेम बढेगा । प्रभु के चरणों में ऐसी प्रार्थना ।

- साधु सत्संग भूषणदास, जूनागढ, स्वा. मंदिर राजकोट, साधु आत्मप्रकाश स्वामी, साधु नारायणदास स्वामी

सत्संगबालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

समर्पित शिष्य कैसे हो ?

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

प्राचीन भारत वर्ष में धौम्य नामक एक ऋषि हुये । उनकी श्रेष्ठ ऋषियों में गणना होती थी । भारत वर्ष में चारो तरफ उनके शिष्यों की प्रसंशा होती थी । उनके नाम से प्रभावित होकर युवान तथा किशोर उनके आश्रम में पढने के लिये आते थे ।

उनके आश्रम में विद्यार्थियों की संख्या बहुत थी । उनमें उपमन्यु नाम का एक शिष्य था । मधुर भाषी, स्वभाव में शांत तथा सरल स्वभाव वाला था । इस लिये गुरुजी के ऊपर तथा मित्रों पर उसकी अच्छी छाप थी । सभी उससे प्रेम करते थे । लेकिन कुछ द्वेषी विद्यार्थी भी वहाँ थे ।

प्राय: ऐसा देखने में मिलता है कि जहाँ अच्छाई है वहाँ बुराई भी रहती है । अच्छे विद्यार्थी उसकी प्रसंशा करते बुरे विद्यार्थी उसकी निन्दा करते । कई बार उसकी शिकायत गुरुजी के पास करने जाते । ऐसे इर्ष्यालु शिष्यों को शिक्षा देने के लिये गुरुजीने एक पद्धति अपनाया । वे उपमन्यु की श्रेष्ठता साबित करना चाहते थे । इसलिये उपमन्यु की परीक्षा लेने के लिये सभी आश्रम के शिष्यों की उपस्थिति में उपमन्यु को बुलाकर पूछे कि तुम पूरे दिन क्या करते हो ? तब उपमन्यु ने कहा कि गुरुजी ? प्रात: उठकर आश्रम की सफाई, स्नान करके संध्या वंदन, कुटीरकी सफाई, पूजापात्र की सफाई, पुष्पचयन, जल, फल, तुलसी इत्यादिका चयन करके आपके पूजा को तैयार करता हूँ । बीच में उसकी वात रोककर गुरुजीने कहा कि कल से यह सेवा अब तुम्हें नहीं करना है । कल से तुम गाय चराने जाना और भिक्षावृति को वंदना करना, भोजन नहीं करना । ठीक है गुरुजी ।

दूसरे दिन प्रात: होते ही गायों को चराने चल दिया । जंगल में गायों को लेकर गया, वहाँ पर भूख लगी तो गाय को दुहकर दूधपीलिया । इस तरह दो–तीन महीने बीत गये । फिर भी वह स्वस्थ ही दिखाई दिया । यह देखकर इर्ष्यालु शिष्यों ने पुन: गुरुजी को सिकायत किया । तब गुरुजी उपमन्यु को बुलाकर पूछते हैं कि तू भिक्षा मांगता नहीं है तो जंगल में क्या खाता है ? उसने कहा गुरुजी ! मुझे जब भूख लगती है तो गाय का दूधनिकालकर पीलेता हूँ । गुरुजीने दूधपीने के लिये भी मना कर दिया ।

मित्रों ! गुरुजी जब कठोर होते हैं तो कैसे होते हैं ? हम अथवा आप में से कोई रहा होगा तो गुरुजी को छोड़कर कब का चले गये होते । लेकिन उपमन्यु तो दृढ निश्चयी । गुरुजी चाहे जैसी परीक्षा लें । गुरुजी की आज्ञा स्वीकार कर लिया, दूधनहीं पीने की । दूसरे दिन गायों को लेकर जंगल में जाता है, वहाँ पर भूख लगी तो अब क्या करे ? देखा तो बछड़े अपनी मां का दूधपी रहे हैं उसमें से झाग निकल रही है । गुरुजीने दूधपीने के लिये मना किया है, झाग चाटने के लिये तो मना नहीं किया है । अब वह झाग चाटकर अपना समय बिताने लगा । अब भी वह पहले जैसा स्वस्थ । पुन: ईर्ष्यालु शिष्यों ने गुरुजी के पास जाकर सिकायत की । गुरुजीने उपमन्यु को बुलाकर पूछा कि अब तूं क्या पीता है ? तब वह सत्य बात बता देता है कि गुरुजी जब बछड़ा माका दूधपीता है उसके मुंख से जो गाज (झाग) निकलती है उसे चाटकर बुभुक्षा को शांत करता हूँ । गुरुजीने कहा कि बछड़े बहुत दयालु होते हैं वे तुम पर कृपा करके आधा दूधकी झाग बाहर गिराते हैं । अब वह भी चाटना तुम बन्द करदो । उपमन्यु गुरुजी की यह वात मान लिया । और बड़े आनंद के साथ पूर्वत् गायों की सेवा करता रहा ।

जंगल में गायों के पीछे–पीछे फिरने से तथा बालक होने से जठराग्नि भी उद्दीप्त थी भूख सहन नहीं होती थी लेकिन गुरुजी की आज्ञा । इस तरह उसे उपवास करके एक सप्ताह बीत गया । एक दिन भूख सहन नहीं हुई तो मदार के पत्ते को खा लिया, इससे उसकी झहरीली असर होने से उसको दिखाई देना बन्द हो गया । अब सायंकाल आश्रम में किस तरह पहुंचे ! एक गाय की पूछ पकड़कर पीछे पीछे चलने लगा । लेकिन बीच में कूआँ आया उसी समय उसके पैर में ठेस लगी और गाय की पूंछ छूट गयी वह जाकर कूंआँ में गिरा । गांये भी नित्य की तरह आश्रममें पहुंचगयी । उपमन्यु कहीं दिखाई नहीं दिया । इससे उसको चाहने वाले

उसके मित्र गुरुजी के पास जाकर बात किये गुरुजी ! गांये जंगल से आगयी लेकिन उपमन्यु नहीं आया । यह सुनकर गुरुजी कुछ शिष्यों को साथ लेकर दीपक के प्रकाश में उपमन्यु को खोजने के लिये निकल पड़े । जोरों की आवाज देते बेटा उपमन्यु कहाँ हो ? इस तरह की आवाज देते हुये जंगल के भीतर पहुंच गये लेकिन कहीं भी उसका अता पता नहीं चला । संयोगवश जहाँ से वे लोग निकल रहे थे उसी के पास के कूंए में से आवाज आई गुरुजी मैं यहाँ कूंयें में गिर गया हूँ ।

गुरुजी तथा अन्य सभी कूयें के पास पहुंचे । रस्सी कूंये में लटकाकर उपमन्यु को बाहर निकाले । उसे दिखाई नहीं दे रहा था तो उसका कारण पूछा, उसने भूख लगने पर धतूर के पत्ते खाये हैं ऐसा बताया । गुरुजीने उसे सान्तवना दिया । गुरुजी कोई सामान्य मनुष्य नहीं थे । तपस्वी थे । वे अपने तपोबल से देवों के वैद्य अश्विनी कुमारों को बुलाये । अश्विनी कुमारों ने उपमन्यु की आंख देखकर कहे कि आंख ठीक हो जायेगी हम जो देते हैं वह खाजाये - दिखाई देने लगेगा । वैद्यराज मालपूआ देते है और कहे कि इसे खाजाओ । लेकिन वह खाया नहीं । पुनः वैद्य कहते हैं यह दवा के रुप में है, इसे खाजाओ । वह गुरुजी की आज्ञा का पालन करता है इसलिये खाता नहीं, यह देखकर गुरुजी मन ही मन प्रसन्न होते हैं ।

लेकिन वह तो गुरु की आज्ञा में परायण था । विना आज्ञा के वह खा सकता नहीं । बाद में गुरुजीने आज्ञा की कि उपमन्यु तुम मालपूआ खालो, वह ज्यों ही मालपूआ खाया त्यौं हि उसके आंख की दृष्टि वापस आ गयी । पहले जैसा उसे दिखाई देने लगा ।

अश्विनी कुमार तथा गुरुजी दोनो उसकी गुरु भक्ति देखकर खूब प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद दिये कि बेटा उपमन्यु ! विद्या की देवी सरस्वती तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगी और तूं महान विद्वान होजायेगा । संसार के लोग तेरी इस निष्ठा तथा श्रद्धा एवं गुरु भक्ति का उदाहरण देंगे और प्रेरणा लेंगे, तुम से ही इस कला को सीखेंगे तभी उनमें गुरु की कृपा उतरेगी और सुखी होंगे ।

निष्कुलानंद स्वामी इस आख्यान का वर्णन धीरजाख्यान में किया -

हम गुरुनी आज्ञा, जे पाले परम सुजान,
निर्विघ्न ते नर थई, पामे पदनिर्वाण ।
गुरु कृपाए सुख पामीए, गुरु कपृाए उपजे ज्ञान,
निष्कुलानंद गुरुकृपा करे, तो आपे अविचल दान ॥

इसी प्रकार श्रीहरिने भी माता-पिता-गुरुकी सेवा करने के लिये आज्ञा की है ।

●

पंडितजी पिघले अवश्य

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

नवावास में सभा लगी थी । श्रीजी महाराज ऊंचे आसन पर विराजमान थे । सभी संत, हरिभक्त, स्त्री-पुरुष श्रीहरि के सन्मुख बैठे थे ।

उसी समय एक विद्वान नाम के सभा में प्रवेश करते हैं । पं. केशव को आते देखकर श्रीहरि ऊँचे आसन से ऊठ कर नीचे के आसन पर बैठजाते हैं । केशव पंडित श्रीहरि के चरण के पास आकर बैठ जाते हैं । बड़ी ऊँची गर्वीली आवाज में बोलने लगते हैं ।

आप ईश्वर कहलाते है लेकिन आप में ऐसा कोई ऐश्वर्य दिखाई नहीं देता । आप मात्र मंत्र-तंत्र के जानकार है । इसी से भोले भाले लोग आपके बहकावे में आ गये हैं । आप समाधिकराते है इसमें भी विश्वास नहीं है । अष्टांग योग की सिद्धि के विना प्राण निरोधहो ही नहीं सकता । फिर भी आप किस तरह से समाधिकरा सकते हैं हे स्वामिनारायण ! आप विद्वान हैं तो आप से हम प्रश्न करते हैं, उसका उत्तर दीजिये ।

तब श्रीहरिने बोला कि हमें तो कुछ भी नहीं आता । आप तो बेद, पुराण, उपनिषद इत्यादि को पढे हैं । इसमें हमें कुछ ज्ञान नहीं । आप को यदि पूछना है तो इस बालक से पूछलीजिये ऐसा कहकर श्रीहरिने एक चारण के बेटे की तरफ इशारा किया । केशव पंडितने कहा कि यह चारण का बेटा हमारे प्रश्न का क्या उत्तर देगा । हा पंडितजी इसी से पूछिये हम लोग जो भी पढे हैं इसी बालक से पढे हैं ।

यह सुनकर पंडितजी बड़े क्रोधमें कहने लगे कि यह शूद्र बालक है इसे कौन वेद पढाया ? वेद तो केवल ब्राह्मण के पढने का विषय है । श्रीहरिने कहा किसी लालची ब्राह्मणने इसे वेद पढाया है । इतने में तो वह बालक वेद बोलने लगा । स्वर के साथ वेद पाठ सुनकर पंडितजी आश्चर्य में पड़ गये । एक बालक विना भूल के सस्वर वेद मंत्र पाठ कर रहा है ।

केशव पंडितकी ज्ञान शक्ति यहाँ पर काम कर गयी । उन्हें निश्चय हो गया कि यह बालक कोई सामान्य नहीं है । इसके

भीतर स्वयं भगवान विद्यमान होकर बोल रहे हैं। दूसरे कोई अन्य भगवान नहीं बल्कि सभी कारणो के कारण स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवान ही हैं।

केशव पंडित की मनोवृत्ति श्रीहरि में स्थिर हो गयी। भगवान के स्वरुप का साक्षात्कार हो गया। समाधिसे जगने के बाद प्रभु के चरणों में गिर पड़े। मांफी मांग कर स्तुति करने लगे। आपकी मैं शरण हूँ आप मुझे अपनी शरण में लेलीजिये। हम आपके संतो के साथ रहेंगे।

उसी समय पंडितजी की माताजी सभा में खड़ी होकर कहने लगी, प्रभु मेरे ऊपर दया कीजिये, यह मेरा एकलौता बेटा है, इसे साधु मत बनाइये।

श्रीहरि केशव पडंति के मस्तक पर हाथ रखकर कहे कि आपको साधु बनने की जरुरत नहीं। संसार में रहकर मेरी भजन-भक्ति करते रहियेगा।

सज्जनो ! स्वभाव चाहे किसी का जैसा भी हो, यदि उसे सत्संग का रंग लग गया तो स्वभाव बदल जाता है और सद्भाव वाला हो जाता है। दूसरी बात यह कि चाहे कितना भी कोई क्यों न पढा हो परंतु वह विद्या भगवान के पहचानने में सहायक न हो तो उस विद्या की कोई उपयोगिता नहीं। जो विद्या संसार के काम में आये उसे भौतिक विद्या कहते हैं। सच्ची विद्या तो वह है कि ''सा विद्या या विमुक्तये''। जो विद्या मुक्ति का साधन है वही विद्या श्रेष्ठ है। केशव पंडित की विद्या भगवान को पहचानने में सहायक हो गयी इस लिये विद्या की सार्थकता स्पष्ट हो गयी।

प्रेरणादायी प्रसंग

बालवा गाँव के वृद्ध हरिभक्तों को युवा हरिभक्त श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन कराकर संकल्प पूर्ण किये

– श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, बालवा

वृद्धावस्था में व्यक्ति बहुत असहाय हो जाता है। यदि सत्संग का संस्कार जीवन में हो तो जीवन के अन्तिम समय तक वृद्ध मा-बाप की सेवा करते रहते है।

वर्तमान समय में ता. १३-११-११ रविवार को बालवा गाँव में रहने वाले श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के अनन्य निष्ठा वाले युवान हरिभक्त प्रत्यक्ष सेवा का सहारा बनकर जीवन की संध्या में पहुंचे हुये वृद्ध हरि भक्तों के संकल्प को पूर्ण किये है। जिस में बालवा के रहने वाले तथा वर्तमान में अमेरिका के निवासी श्री कांतिभाई गोवाभाई चौधरी सहयोगी बने हैं।

यहाँ गाँव के महादेव वास, श्रीनगर, अंबाजीवास, छत्रीवाली गाँव के लोग तथा बड़े भागोल के कुल करीब १५२ जितने वृद्धों को किसी केहाथ पकड़े किसी को उठाकर गाड़ी में बैठाकर अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करवाकर जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का दर्शन कराकर वहीं पर भोजन करवाया। यहाँ के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी ने युवानों की सेवा की प्रसंशा करते हुये कहा कि बालवा का गाँव तथा बालवा गाँव के युवान धन्य है। आपलोग बड़ा ही अद्भुत काम किये हैं।

बाद में सभी को श्री स्वामिनारायण म्युजियम में लाये वहाँ पर व्हीलचेर की सुंदर व्यवस्था करके प्रत्येक वृद्धों को म्युजियम के प्रत्येक हाल में स्थित प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करवाया। प्रत्येक दर्शन में सभी श्रीहरि के प्रत्यक्ष दर्शन का एहसास हुआ था। प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सत्संग के लिये कितना बड़ा कष्ट उठाकर संप्रदाय के लिये इतना बड़ा म्युजियम का स्वरुप दिया है। यहाँ पर विराजमान जितनी वस्तुयें है वे सभी संकल्पो को पूर्ण करती हैं। इन वस्तुयें के रुप में प्रत्यक्ष भगवान विराजमान है। स्वयं भगवान के पुत्र भगवान ही है वे ही अशक्य कार्य को शक्य कर सकते हैं। आज इस दर्शन में बालवा गाँव के वृद्धों का स्वप्न साकार हुआ।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचनमें से -
"सुख का मूल धर्म है"
- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

मनुष्य जीवन मिलने के बाद मनुष्य को सुखी होना हो तो धर्ममय जीवन जीना चाहिये । धर्म को रखने से मनुष्य सुखी हो सकता है । तो यह धर्म क्या है ? अधर्म का अर्थ क्या है । धर्म कहां से प्रगट होता है ? धर्म को निभाने के लिए क्या करना चाहिये ? धर्म का विनाश कब होता है ? प्रथम हम जानते हैं कि धर्म क्या है ? समग्र मानवजाति का संचालन करने के लिए जो नियम बनाए गए हैं उसको धर्म कहते हैं । धर्म के सर्वोपरि पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण है सत्य स्वरुप ? जीवन में दु:ख आजाए तो उसका सामना करने के लिए धर्म में रहना चाहिए । पवित्रता अर्थात् कलियुग में अदंर की पवित्रता को संभालकर रखना । अंदर से मन में कोई भी दुर्भाव नहि लाना चाहिए । करुणा अर्थात् कोई प्रसंग देखकर दया उत्पन्न हो उसे करुणा कहते हैं । जिसके जीवन में करुणा नहीं उसकी जिदगी में निर्दयता आ जाती है । परंतु जो महान व्यक्ति करुणा सभर होते है । समग्र जीवन प्राणीमात्र पर दया होती है । कहते है कि धर्म विना का मनुष्य पशु समान है । पशु तथा मनुष्य के बीच का भेद जानना हो तो धर्म का पालन करना चाहिए । (१) मर्यादा (२) नीति । नीति तथा अनीति क्या है ? भेद क्या है ? धर्म तथा अधर्म के बीच भेद समझने के लिए भगवानने बुद्धि दी है । धर्म क्या है ? विपरीत परिस्थियों में अधर्म का जन्म होता है । धर्म कहा से प्रगट होता है ? धर्म प्राप्त करने के लिए दो चीजें मुख्य है । शुद्धि जप सरलता । और वे सत्संग में मिलती है । सत्संग का अर्थ क्या है । सत्संग का अर्थ है सत्य का अंत तथा धर्म का स्थान क्या है ? वो है सत्य ? सत्य कहाँ से मिलता है । सत्य के साथ रहने से सरलता से प्रगट होता है । तथा सरलता से जीवन में अहंकार नही होता । धर्म को निभाने के लिए क्या जरुरी है । धर्म सत्संग में से प्रगट होता है । धर्म को निभाने के लिए क्षमा तथा दया की आवश्यकता है । क्योकि यदि किसीने हमारा कुछ बुरा किया हो और यदि जीवन में दया होगी तो ही क्षमा कर सकेंगे । धर्म का विनाश कब होता है । स्वार्थ तथा मिथ्याभिमान से जीवन में धर्म का नाश हो जाता है । धर्म सहित भक्ति का ही महत्व है । नहीं जो भक्ति करना व्यर्थ है । जहाँ धर्म तथा भक्ति है वही महाराज का निवास है । महाराज अर्थात् सर्वोपरि पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण । भक्ति में सभी देवी-देवताओं का समावेश हो जाता है । भगवान ही मूल है । यदि मूल को पोषण मिलेगा तो पेड़ के पत्तों को पोषण मिलेगा और खील उठेगें । मूल को पोषण नही मिलने से पत्तिया मुरझाएगी । आज नरनारायणदेव का आश्रय रखकर भक्ति करो । सुख उसी में सभी देवी-देवताओं की भक्ति का समावेश हो जाएगा । कई लोगो को हम समझाते हैं कि मूल संप्रदाय के मंदिर के अलावा दूसरें मंदिर में नहीं जाना चाहिये । तो सभी ये उत्तर देतें है कि यहाँ भी भगवान है । वहाँ भी भगवान है । हमें तो भगवान का दर्शन ही करना है । उसमें क्या फर्क है । यदि आप ऐसा करेंगे तो आपमें पतिव्रता की भक्ति नहिं होगी । पति की आज्ञा का पालन करना ही पतिव्रता भक्ति है । महाराजने शिक्षापत्री में आज्ञा की है कि पतिव्रता की भक्ति करनी चाहिये । जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा आचार्य महाराजश्रीने की है उसी मूर्ति की पूजा करनी चाहिए । जो इस शिक्षापत्री के अनुसार नही अनुसरण करेगा, तो संप्रदाय के प्रति वफादार नहीं हो सकता । यह नियम हमें न किसी या किसी महाराजश्रीने नहीं बनाए । परंतु स्वयं महाराज शिक्षापत्री में बताकर गए है । तो नरनारायणदेव का आश्रय रखकर पतिव्रता की भक्ति करके प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करनी चाहिए ।

•

जैसे संस्कार वैसा आचरण
- सांख्ययोगी उषाबा (सुरेन्द्रनगर)

बालक को संस्कार देने की जिम्मेदारी उसी की है । माता चाहे तो बच्चों में सही संस्कार दे सकती है । उसके लिए एक प्रसंग को जानते हैं ।

मार्कण्डेय पुराण में एक बात आती है, विश्वासु गंधर्व की एक राजकुमारी थी । उसका नाम मदालसा था । उनका विवाह ऋतुध्वज राजा के साथ हुआ था । राज्य में रहने के बावजूद भी उसे मीराबाई की तरह विषयों में कोई मोह नहीं

था । भक्तिमय जीवन व्यतित करने लगी । वक्त बीतते उसे एक पुत्र हुआ उसका नाम विक्रान्त था ।

बालक को पालने में झूलाकर लोरी में ब्रह्मज्ञान का आत्मा परमात्मा का ज्ञान देते हुए मदालसा कहती, ''हे विक्रान्त ! तु मेरा पुत्र नहीं है । तुम तो शुद्ध आत्मा हो, तुम माया से रहित हो, हे पवित्र आत्मा, हे देह को कोई रिश्तेदार नहीं होता ।''

मैं तो चैतन्य ब्रह्मा का स्वरुप हुं ।''मैं मन, बुद्धि, चित्त का अहंकार नहीं हूँ । मैं कान, जीभ, नाक तथा नेत्रं हूं . मैं आकाश, पृथ्वी तेज, वायु नही हूँ । मैं तो शुद्ध ब्रह्मस्वरुप हूँ । मेरा चिदानंद रुप है । मैं पंचप्राण या पंचवायु नहीं हूँ । मैं सातधातु या पंचकोष नहीं हूँ । मेरी कोई जाति नहीं है । मेरा कोई माता-पिता नही हैं । मेरा जन्म ही नही हुआ तो मृत्यु की भी कोई शंका नहीं । अर्थात् मृत्यु भी मेरा नहीं है । मेरा कोई भाई, मित्र, गुरु या शिष्य नहीं है । मैं चिदानंद स्वरुप हूँ ।

इस प्रकार सदैव उपदेश देकर वैराग्य करवाया । इसीलिए राज्य का त्याग करके विक्रान्त जंगल में चला गया, कुछ वर्षो जाने के बाद दूसरे पुत्र का जन्म हुआ उसका नाम सुबाहु रखा । उसे भी उसी प्रकार के संस्कार देकर त्यागी बना दिया । उसके बाद तीसरा पुत्र का जन्म हुआ । उसका नाम शत्रुमर्दन रखा । उसे भी ज्ञान-वैराग्य का उपदेश देकर संन्यासी बना दिया । चौथे पुत्र का भी जन्म हुआ । उसका नाम अलर्क रखा गया । मदालसा के पति को ख्याल आ गया कि ''वैराग्य का संस्कार देकर मेरी पत्नी ही मेरे पुत्रों को साधु बना दे रही है, इसीलिए इस पुत्र को उसके पास रहने ही नहीं दूंगा । ऐसा निश्चय करके अलर्क को बचपन में ही अपने पास बुला लिया । और माता से मिलने पर प्रतिबंधकर दिया ।

मदालसा को दुःख हुआ, ''अरे ! यह माया में बधजाएगा तो उसका मोक्ष बिगड़ जायेगा । यदि मैं वास्तव में मां हुं तो अपने बच्चों को यथार्थ रुप से त्यागी बनाउँगी । क्योकि केवल जन्म देने से ही माता मां नही कही जाती थी । अपने पुत्र को जन्म-मृत्यु के बंधन से छुड़ाने वाली ही वास्तव में मां होती है । बड़े पुत्र विक्रान्त को वापस बुलाया और कहा कि, ''तुम्हारे पिता तुम्हारे छोटे भाई को मेरे पास नहीं आने देते तो अपने पिता से कहो कि राज्य का मुख्य वारसदार मैं ही हू तो राजगद्दी मुझे ही प्राप्त होनी चाहिए . इसीलिए तुम्हें राजा बनाएगे । छोटे अलर्क को मुक्त करदेंगे । उसके बाद उसे मैं वैराग्य का उपदेश देकर जंगल में भेज दूंगी । बाद में तुम भी चले जाना ।''

माता की बात सुनकर विक्रान्त पिता के पास जाकर राजगद्दी की मांग की । तो पिता को आनंद हुआ । उसे राजा बना दिया । राजा बनने के बाद विक्रान्त ने अलर्क को कहा, ''माता को जाकर प्रणाम कर आना ।'' तब अलर्कने मदालसा के पास जाकर प्रणाम किया, उसके मस्तक के उपर हाथ रखा । तुरंत उसे समाधिहो गई । उसे स्वर्ग के सुख तथा परमात्मा का सुख बताया । उसके बाद यमपुरी दिखाई उस में नरक की मुसीबतों को मैं असंख्य पापीओं को भोग करते हुए देखा । उस दृष्य को देखकर अलर्क डर गया । समाधिउतरते ही मदालसा से हाथ जोड़कर पूछा, हे माता ! इतनी सारी यातनाए कौन भुगत रहा है । उनको क्यों इतना मार मारा जाता है ? मदालसाने कहा, ''हे पुत्र ! यमपुरी का दुःख राजाओ को तथा नौकर को भुगतना पड़ता है । क्योंकि गलत न्याय करके प्रजाको परेशान करने के कारण यमपुरी में राजाओं को बहुत मार मारा जाता है । हे पुत्र ! प्रथम तुमने जो सुख देखा वह सुख की प्राप्ति धर्म, को निभाने वाला भक्ति करनेवाले तथा वैराग्यवान को होती है । वह सुख प्राप्त करने के लिए तीनों भाईयों को राज्य का त्याग करके तप करने चले गए । उसके बाद तुम्हारा जन्म हुआ तुम्हारे पिता तुम्हें मेरे पास आने नहीं देते थे । क्योंकि मैं तुम्हे तुम्हारे भाईयों की तरह त्यागी ना बना दूं इस कारण वे तुम्हे रानीवास में नहीं भेजते थे । तुम राज्य के कारभार में जुड़गए यह सोचकर मुझे लगा की अब तुम्हे यमपुरी में जाना पड़ेगा । तुम्हे उन सब से मुक्त करने के लिए तुम्हारे भाई विक्रान्त को वापस बुलाकर राजा बना दिया । अब तुम्हें जो भी उचित लगे वो करना । यदि तुम्हें अविनाशी सुख चाहिए तो तु भी तप करने चला जा । और यदि जन्म मरण के बंधन में रहना है और यमपुरी की यातनाए भुगतनी हो तो राजा बनकर राज्य कर ।'' माता के ऐसे वचन सुनकर अलर्क त्यागी बनकर चला गया । उसके बाद राजा बने विक्रान्त भी माता की आज्ञा लेकर जंगल में चला गया ।

हे भक्तगण ! ऐसी माता आपने कही देखी है ? जो पुत्र को

साधु होने का उपदेश दे । इसी लिए कवि गण स्त्रियों को ''भारत की आर्य सन्नारी कहते है।''

''जननी जणतो जणजे, भक्त दाता का शूर,
नहितर रेहजे वांझणी, तारुं मत गुमावीश नुर.''

हे भक्तगण ! बालक को कैसा बनाना है उसका आदर जन्म देने वाले माता -पिता के ऊपर है।

●

श्रीहरि का अपरिमीत महिमा

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

इस जगत में जो मनुष्य अधिक धनवान तथा धर्मिष्ट होता है वही सुखी होता है । तथा वही मनुष्य यदि प्रभु की महिमा अधिक जानता है तो और उसका आचरण भी करता है तो वह मनुष्य अति सुख को प्राप्त करता है । महिमा का अर्थ है कि म अर्थात् मृत्यु के बाद, हि अर्थात् हित मा, अर्थात माल प्रदान करे । मृत्यु के बाद हित हो ऐसा माल दे ऐसे परमेश्वर के मायलय को महिमा कहते हैं । जिस प्रकार समुद्र में जितना पानी है उतनी श्याही लेकर भगवान का माहात्म्य पूर्ण नहीं होगा । उसपर एक सुंदर दृष्टांत है । मानसरोवर में एक हंश था उसे विचार आया कि जाकर एक बार अपने मित्र से मिलने जाऊँ । ऐसा विचार किया । और यह भी सोचा कि मिलने जाऊँ तो खाली हाथ न जाउँ । कोई उपहार लेकर जाऊँ । ऐसा विचार करके हंस अपने मित्र को भेट देने हेतु एक चन्द्रकान्त मणी को साथ लेकर चल पड़ा । मित्र के तालाब पहुंचते पहुंचते रात हो गई । रास्ते में एक वृक्ष के नीचे लौकी की लता थी लौकी के अंदर चन्द्रकान्त मणी को लौकी में रख दिया । और रात्रि में उसी वृक्ष पर आराम करने लगा । सुबह होते ही वह उड़ने लगा । और चन्द्रकान्त मणि लेना भूल गया । और घटना इस प्रकार हुई की एक चरवाहा भेड़ बकरी चराने निकला । धूमते धूमते उस वृक्ष के नीचे आ गया उस लौकी को तोडकर घर ले आया । घर जाकर लौकी को छीलकर काटने लगा, उसमें से चन्द्रकान्त मणि नीकली । लौकी में से जो नंग नीकला था वैसा ही नगीना मेरे बकरी के गले में भी हैं । चरवाहा ने सोचा । इसका क्या करुं । इसे भी बकरी के गले में बांधदेता हूँ । दूसरे दिन अपनी बकरियों को चराने ले जा रहा था तो रास्ते में उसे एक व्यापारी मिला । व्यापारीने सोचा की इस नगीने की किंमत इस चरवाहो को मालून होने के कारण उसने इसे बकरी के गले में बांधकर रखा है । चलो इससे कम दान में इस नगीने को खरीद लेता हूँ। फिर सोचा यदि नगीना खरीदूंगा तो नहीं देगा । क्यों बकरी ही खरीद लूं । ऐसा सोचकर शेठने चरवाहे से कहा मुझे इस बकरी को खरीदना है क्या किंमत लोगे ? चरवाहे ने कहा पांच रुपये से कम नहीं । शेठने कहा कुछ कम करिये । चरवाहे ने कहाँ पांच रुपये से एक भी कम नहीं । चरवाहेने पांच रुपये में बकरी दे दी । चरवाहे को विचार आया की मेरी बकरी के साथ मेरा आभूषण भी चला गया । उसने शेठ से कहा बकरी के साथ मैं ने आभूषण को नहीं वेचा । शेठने एक रुपया अधिक देकर आभूषण का पाप चूरा कर बकरी के साथ आभूषण घर ले आया । बकरी के गले में से शेठने चन्द्रकान्त मणी निकाल लिया । और १०० रुपये में बेच दिया । बकरी रुपये १- में बेच दी । इस प्रकार शेठने ६ रुपये में ली बकरी को ११० रुपये में आभूषण के साथ बेच दी । शेठ को जितनी किंमत मणि की थी उतनी वसूल की । दूसरे शेठने उसे १००० रुपयें में बेच दिया । तीसरे शेठने उसे एक लाख में बेच दिया । जैसे-जैसे मणि का माहात्म्य समझ में आया उसकी किंमत बढ़ती गई । एक लाख में से एक करोड में दूसरे शेठने बेचा । एक झवेरीने एक अबज में बेचा । इस प्रकार हीरे की किमत बढ़ती गई ।

बाद में यह हुआ कि यह मणी कहाँ बेचे ? सोनार ने विचार किया कि नगर में किसी विशिष्ट व्यापारी को वेचना ठीक रहेगा । बाद में वह सोनार व्यापारी के घर गया । उस समय व्यापरी कहीं बाहर गया था । बेटा था । बेटेने शेठसे कहा मुझे यह मणी बेचना है । लाइये मणी हमें दीजिये । मणी देखकर बेटेने कहा शेठजी आपको इसकी क्या कींमत दी जाय ? शेठजीने कहा आप जितना दीजिये । बेटे ने कहा शेठजी आप सुबह से शाम तक जितना धन लेजाना चाहे उतनी इसकी कींमत है । आप जितना चाहे लेजांय । यह सुनते ही शेठजी धन लेना आरंभ कर दिया । नगर के सभी मनुष्य विचार करने लगे कि यह लड़का पागल हो गया । क्योंकि एक छोटे से पदार्थ के लिये इतने बडे धन को देबैठा है । यह विचार करके नगर के सभी मनुष्य लड़के के पिता को परदेश से पत्र लिखकर बुलवाये । पिताजी आते ही देखे कि घर में कहीं धन दिखाई नहीं दे रहा है तो बेटे से पूछे कि सभी धन कहाँ चला गया तो बेटेने बताया कि एक नंग के लिये सभी धन व्यापारी को देदिया है । नंग लाकर पिताजी को दिखाया । पिताजी

बालक पर बहुत प्रसन्न होते हैं और कहते है कि तुम ठगाये नही हो बल्कि तुमने उसे ठग दिया है जितने धन दिये हो उससे कई गुना इस मणीकी कींमत है।

बाद में पिताजी ने कहा चलो हम तुम्हे इसकी सच्ची पहचान तथा कीमत का अन्दाज बताते हैँ। शरद पूर्णिमा की रात्रि में एक थाली के भीतर पानी भरकर उसमें उस मणी को रख देता है, और छत के ऊपर रखकर थोड़ी दूरी पर बैठजाता है।

जब पूर्णिमा का चांद आकाश के बीच में आया और मणी तथा चन्द्र की एकाग्रता होते ही सोने की वृष्टि होने लगती है। पूरा छत सोने से भर जाता है। जब चन्द्र की किरणें मणी पर पड़ती बन्द होगयी तो सुवर्ण की वरसात भी बन्द हो गयी। इस तरह प्रति पूर्णिमा को जितनी आवश्यकता हो उतनी सुवर्ण की प्राप्ति कर लेता था। जितनी उसे महिमा मणी की समझ आयी उतना वह लाभ लिया।

इसी तरह जो व्यक्ति श्रीहरि की महिमा को जानता है वह अधिक सुखी होता है। इसलिये प्रभु की महिमा को जानकर सदा उन्हीं में आत्मसर्पित भाव रखकर सभी सुखी हो सकते हैं।

●

सर्वोपरि शुद्ध उपासना

- सांख्ययोगी गीताबा (विरमगाँव)

आज अक्षरधाम में विराजमान होकर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण अनंत मुक्तो तथा अनंत संतो के साथ खूब प्रसन्न होते होंगे। इस घोरकलिकाल में व्याप्त अधर्म का नाश करके शुद्ध धर्म की स्थापना करके, शुद्ध उपासना तथा पतिव्रता के एकांतिक माहात्मय को आज से करीब २०० वर्ष पूर्व फैलाया था। तत्कालीन नन्द संतो को साथ लेकर प्रभु ने मोक्ष मार्ग को इतना सरल कर दिया कि आज सारा जगत उसका प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा है। भगवान श्रीहरि की आज्ञा से उनकी बताई दिशा में चलने वाले आज सभी त्यागी-गृही सुखी है।

जिस तरह समुद्र के किनारे रहने वाले को ही ख्याल आता है कि प्रतिवर्ष समुद्र से जीवन कीतनी कटकर भीतर जा रही है। समुद्र में समाती जा रही है। व्यक्ति अपने घर में भी यदि समय समय पर ध्यान न दे तो घर रहने लायक नहीं रहेगा। इसी तरह भगवान स्वामिनारायण ने सम्प्रदाय रुपी बगीचे को खुब हरा भरा रखा है। मैं यह कर्ता हूँ इस प्रकार का भाव अहंतत्व को प्रगट करता है। यह मेरा घर है, यह मेरा बेटा है, यह मेरा, यह तेरा इत्यादि का भाव होना ही ममता है। अहंता एवं ममता ही सबसे बड़ी माया है। इस ममता में से जो उबरना चाहते है वे श्रीहरि में अपनी स्मृति रखे, यही मुक्ति है इसलिये मुमुक्षु मायिक वस्तु का परित्याग करके परमार्थिक तत्व में अपना मन लगावें।अन्तः) करण में सदा प्रभु का स्मरण बना रहे ऐसी अखंड स्मृति रखनी चाहिये। मनुष्य में एक दोष है जब सुख में होता है तो प्रभु को भूल जाता है और प्रभु के साथ ही विरोधकर लेता है। जब दुःख आता है तब कहा भगवान ने ही मुझे यह दुःख दिया है।

सभी सत्संगी यह विचार करें कि हम नियम कितना पालते हैं। धर्म का कितना पालन करते है। उपासना शुद्ध है या नहीं ? इन सभी पर विचार करने की अपेक्षा पर भगवान का ही दोष बताते है। जो भगवान स्वामिनारायण के आश्रित है और शिक्षापत्री के अनुसार नीति-रिति का पालन करते हैं तो दुःख नहीं आना चाहिये। आज्ञापालन नहीं करना है, उपासना शुद्ध नहीं रखनी है तो दुःख निश्चित ही आयेगा ? जहाँ खिचड़ी खाने को मिले वहीं जाना। ऐसी अपनी उपासना है। पू. महाराजश्री पू. गादीवालाजी के गुरुमंत्र लेने के बाद कुत्ते की तरह इधर उधर भटकते रहते हैं। इससे महाराज कभी प्रसन्न नहीं होगे। अहमदाबाद में प्राणवल्लभ नाम के एक व्यक्ति थे। उन्होंने यह संकल्प किया कि हम हर मंदिर में जायेंगे जहाँ पर हमारे हार को प्रभु सामने से स्वीकार करेंगे वही पर हम भक्त बनेंगे। अब वह प्रत्येक मंदिर में हार लेकर घूमने लगा। अंत में कालुपुर मंदिर की सीढी पर चढ़ता है और मन में ऐसी आवाज आती है कि ले आ भक्त तेरे हार को मैं स्वीकारता हूं, तूं कब तक भटकता रहेगा। क्या प्रभु नरनारायण को हार नहीं मिलता, लेकिन ऐसा नहीं। यहाँ तो प्रभु भक्त की मनोकामना को पूरा करना चाहते हैं। मनोकामना को पूर्ण करने की अलौकिक शक्ति प्रभु नरनारायणदेव में ही है। अब दूसरे के यहाँ जाने की क्या आवश्यकता। भगवान में तथा प्रभु में एक मात्र निष्ठा हो तो अन्यत्र भटकना अपनी मानवता का पतन कर ने जैसा है। सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की उपासना अत्यन्त शुद्ध हो ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

सत्संगसमाचार

अहमदाबाद श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज का १२६ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पुजारी स्वामी की प्रेरणा से प.भ. अमितभाई पी. मनाणी, प.भ. ओमप्रकाश सी. मातावाला, तथा प.भ. रुपलबहन डी. गोहील (कांदीवली मुंबई) के यजमान पद पर रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज का १२६ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्तिक शुक्ल पक्ष-१२ प्रातः ६-३० से ७-०० तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक किया गया। अन्नकूट की आरती तथा दर्शन के लिये, हजारो भाविक हरिभक्तगण पधारे थे। प्रासंगिक सभा में यजमान परिवारने प.पू. महाराजश्री का पूजन आरती करके भेट देकर आशीर्वाद लिये। - राम स्वामी, पुजारी

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से, अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से प.भ. विनोदराय गणपतराम शेलत तथा प.भ. शारदाबहन विनोदराय सेलत के शुभ संकल्प से उनके चि. सुपुत्र प.भ. किल्लोलभाई तथा चि. श्री श्यामभाई आदि परिवार के तरफ से अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा धर्मवंशी की शुभ उपस्थिति में ता. २-११-२०११ से ता. ८-११-११ तक श्रीहरि को प्रियरुप श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र का सप्ताह पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता पू. स.गु.शा. स्वामी निर्गुणदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. विश्ववल्लभदासजी के वक्ता पद पर धूमधाम से सम्पन्न हुई। संहिता पाठ के वक्ता स.गु. पुराणी स्वामी धर्मजीवनदासजी थे। सात दिवस के यजमान परिवार तथा उनके रिश्तेदारों ने कथामृत का अलौकिक लाभ लिया। सातों दिवस ठाकुरजी को भोग, फूलहार, संतवर्णी पार्षदो को २ दिवस भोजन, तथा संतो को धोती, तमाम ठाकुरजी की मूर्तियों को सुंदर अलौकिक वस्त्र, तथा धर्मकुल को भेट आदि यजमान परिवारने प्रदान किए। समग्र प्रसंग में कोठारी पार्षद दिगंबर भगवत, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, आदि संत मंडलने सुंदर सेवा की थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीने यजमान परिवार को अशीर्वाद दिए। उसी प्रकार बहनों को भी प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू. बड़ी गादीवालाश्रीने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिए।

- मुनि स्वामी

मुबारक में प्रथम वार्षिक पाटोत्सव त्रिदिनात्मक कथा तथा भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा पू. स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर के प्रथम वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष में त्रिदिनात्मक धीरजाख्यान कथा तथा भव्य शाकोत्सव ता. १३-११-२०११ से ता. १५-११-११ तक मनाया गया।

पाटोत्सव तथा पारायण के मुख्य यजमान पद का प.भ. रणछोडभाई मोतीभाई पटेल, हा. प.भ. महेशभाई रणछोडभाई पटेल परिवारने महालाभ लिया था। पारायण के वक्ता पद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) बिराजमान थे। प्रथम दिवस प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने कथा में पधारकर बहनों को दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिया था। दूसरे दिवस शाम को प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। श्रीहरि के समान शाकोत्सव का वघार करके प्रत्यक्ष श्रीहरि स्वरुप में भासित हो रहे थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल मुबारकपुर के उत्साही युवको की सेवा प्रेरणारुप थी।

- शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर गुरुकुल

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शरदोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के

पावन सानिध्य में तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी (नारायणघाट मंदिर महंतश्री) के मार्गदर्शन से प.भ. डाह्याभाई नारणदास पटेल परिवार ह. मेहुल तथा पूरब तथा समस्त परिवार के मुख्य यजमान पद पर ता. ११-१०-११ आश्विन शुक्लपक्ष-१५ मंगलवार को श्री घनश्याम महाराज के शुभ सानिध्य में भव्य शरदोत्सव मनाया।

इस प्रसंग में प.पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । साथ में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संत पधारे थे । प्रथम प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती यजमान परिवारने की। उसके बाद समूह आरती तथा गवैया श्री हसमुखभाई पाटडीया तथा श्री पूरव पटेलने कीर्तन भक्ति का सुंदर लाभ दिया । अंत में सभी को दूधचिउड़ा का प्रसाद दिया गया। सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

- बालस्वरुप स्वामी

श्रीहरि के प्रसादीभूत विहार गाँव में श्रीमद् भागवत कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अ.नि. द्वारकादास कचरादास पटेल (दासभाई आंगडीया) तथा गं.स्व. शारदाबहन द्वारकादास पटेल तथा गं.स्व. जोईतीबहन मंगलभाई पटेलके शुभ संकल्प से प्रसादीभूत विहार गाँव में श्रीमद् भागवत् पंचाह्न पारायण ता. २८-१०-११ से ता. १-११-११ तक हुई। जिस के मुख्य यजमान अ.नि. कचराभाई भगवानदास पटेल परिवार थे । कथा के वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) थे।

इस प्रसंग पर स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) आदि संतोने प्रेरक प्रवचन किये। यजमान परिवार के आमंत्रण को सन्मान देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर आशीर्वाद दिये। समग्र सभा में शा.स.गु. छोटे पी.पी. स्वामी (नारणघाट महंतश्री) प्रेरणारुप थे।

- शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर गुरुकुल

प्रसादी के कुंडल गाँव में पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अ.नि. खोड़ीदास चतुरदास पटेल, अ.नि. रेखाबहन खोडी़दास पटेल तथा भाईश्री दशरथभाई खोड़ीदास के स्मरण हेतु ता. ३-११-११ से ता. ७-११-११ तक श्रीमद् भागवत् पंचान्ह पारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर हुई। इस प्रसंग में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.सा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट मंदिर) आदि संतगण पधारे थे। यजमान पद का लाभ प.भ. चंदुभाई खोड़ीदास पटेल आदि परिवारने लिया। कार्यक्रम के मार्गदर्शक छोटे पी.पी. स्वामी (नारणघाट महंतश्री) थे।

- अश्विनभाई नवा वाडज

श्रीहरि के प्रसादीभूत गवाडा गाँव में त्रिदिनात्मक रात्रीय सत्संग पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से तथा प.भ. अंबालाल कोदरदास पटेल तथा अ.सौ. रुखीबहन अंबालाल पटेल की जीवन चर्या निमित्त ता. ३१-१०-२०११ से ता. २-११-२०११ तक त्रिदिनात्मक भक्ति आख्यान कथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर हुई। पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। प्रासंगिक सभा में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी आदि संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया। अंत में समस्त सभा तथा यजमान परिवार को प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिए । सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजीने (नारणघाट महंतश्री) किया।

- शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

मारुति यज्ञः श्रीहरिने कांकरिया तालाब को प्रसादी की भूमि बनाया था । उस भूमि पर आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने धर्मकुल के कुलदेवता श्री कष्टभंजन देव की स्थापना-प्रतिष्ठा की थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से भव्य मारुतीयज्ञ का आयोजन किया गया । यज्ञ की पूर्णाहुति प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिवत पूर्ण हुई । प्रासंगिक सभा में संत हरिभक्तों को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये।

लाभ पंचमी को उत्सव मनाया गया

कार्तिक शुक्ल पक्ष-५ लाभ पंचमी को बालस्वरुप कष्टभंजन देव के उत्सव में कष्टभंजन देव का अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने किया। इस प्रसंग का लाभ हजारों हरिभक्तोंने लिया। महंत स्वामी तथा संत मंडलने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था। - डॉ. हिरेन पटेल कांकरिया

श्री स्वामिनारायण मंदिर आंतरोली का दूसरा पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणों से अंकित आंतरोली गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से आंतरोली गाँव के मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव तथा नाथद्वारा मंदिर के प्रणेता तथा धर्मकुल के निष्ठावान तथा सेवानिष्ठ स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (दादा स्वामी) के हरिभक्तों की तरफ से उनकी सत्संग की सेवाए तथा श्रीजी महाराज का साक्षात्कार करने वाले संत को ऋण अदा करने अमृत महोत्सव का आयोजन उनके शिष्य स.गु. महंत स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा) द्वारा किया गया था । इस प्रसंग पर प्रथम दिवस जेतलपुर से पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. श्यामचरणदासजी स्वामी, अहमदाबाद मंदिर के महंत पू. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. पुराणी स्वामी जगतप्रकासदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी आदि संतोने मंगलदीप का प्रागट्य किया था। उसके बाद शोभायात्रा निकाली गई। प्रथम सगु. विवेक स्वामीने संतो के साथ पू. महाराजश्री का अभिवादन किया। शोभायात्रा पूर्ण होते ही प.पू. आचार्य महाराजश्री मंदिर में ठाकुरजी की आरती की।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन ता. ३-११-११ से ९-११-११ तक स.गु. महंत शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (नारणपुरा) ने कथामृत पान करवाया। सहिंता पाठ में स.गु.शा.स्वा. भक्तिवल्लभदासजी बिराजमान थे । इस प्रसंग में सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी ने किया था।

रसोई सेवा में स.गु. बलदेव स्वामी (बापू) स.गु. विश्वप्रकाशदासजी (लालोडा) महंतश्री के.पी. स्वामी (जेतलपुर) अनिरुद्ध स्वामी (मूली) मुकुन्द स्वामी, स्वयंप्रकाशदासजी, आनंद स्वामी (नाथद्वारा), नरेन्द्र भगत, जीतु भगत, जयदीप भगत, भोगीलाल भगत तथा गुलाब भगत की सेवा प्रेरणारुप थी।

पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। उनके वरद् हाथों से वेदोक्त अभिषेक विधिपूर्ण हुई । अंत में सभा को तथा भंडारी स्वामी को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग पर भंडारी स्वामी के प्रियपात्र अमेरिका, अहमदाबाद, लसुन्द्रा, आंतरोली, वासणा, भाटेरा, सताल तथा बावचर गाँव के हरिभक्तोंने तन, मन, धन, से सेवा की।

- कोठारीश्री, आंतरोली

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबड़ीया (पंचमहाल)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से कार्तिक शुक्लपक्ष-१ को ठाकुरजी समक्ष भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया। इस प्रसंग पर कोठंबा खारोल, मेरानी मुवाडी, आदि गाँव के हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ लिया।

- का. हरिकृष्णभाई

प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से, शा.घनश्याम स्वामी की प्रेरणा से काली चतुर्दशी को प्रभा हनुमानजी महाराज समक्ष मारुतीयज्ञ, सुंदर कांड, अन्नकूट, तथा सत्संग सभा महाप्रसाद का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर स.गु. पुराणी स्वामी जगतप्रकाशदासजी मूली से स्वामी हरिस्वरुपदासजी, प्रेमस्वरुप स्वामी, जे.पी. स्वामी, विष्णु स्वामी, विजय स्वामी, उत्तम स्वामी, चंद्रप्रकाश स्वामी आदि संतगण पधारे थे। प.भ. दशरथभाई पटेल तथा प.भ. रतिभाई पटेल (स्कीम कमेटी सभ्यश्री) आदि हरिभक्त भी पधारे थे। युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी।

- विरेन ठक्कर

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से एकादशी सत्संग मंडल का प्रारंभ कार्तिक शुक्ल पक्ष-११ ता. ६-११-११ रविवार को प.भ. विष्णुभाई केशवलाल पटेल के घर भक्ति कीर्तन, कथावार्ता करके किया गया। यह सभा प्रत्येक एकादशी को भिन्न-भिन्न हरिभक्तों के घर की जाएगी। इस प्रसंग में प.भ. जयंतीलाल कालीदास पटेलने अपने पिताश्री के स्मरण हेतु संगीत साधनो की सेवा की।

माणसा के पास अंबोड गाँव में ता. ७-११-११ को प.भ. चावड़ा हरसिंह छगनजी, चावड़ा नवुभा हरिसिंह की जीवन चर्या निमित्त पर श्री नरनारायणदेव आदि देवों को भोग लगाकर मंदिर में रसोई दी गयी थी। माणसा मंदिर के संतोने कथावार्ता का लाभ दिया। - भाविन पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर नए वणझर में पाटोत्सव शाकोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा सगु. स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव ता. १३-११-११ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रीहरिकृष्ण महाराज का वेदोक्त अभिषेक धामधूम से सम्पन्न हुआ।

प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान प.भ. महेशभाई तथा श्री मथुरदासने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये। समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिए।

इसके बाद प.पू. लालजी महाराजश्री शाकोत्सव प्रसंग पर पधारे थे। हरिभक्तों ने प.पू. लालजी महाराजश्री का स्वागत किया। मंदिर में दर्शन करके सभा में पधारे थे। जहाँ भव्य शाकोत्सव का बघार किया। प्रासंगिक सभा में स.गु. पुराणी स्वामी जगतप्रकाशदासजी, जयदेवपुरा के संत तथा रमणभाईने प्रसंगोचित प्रवचन किया। इस प्रसंग में श्री प्रकाशभाई ठक्कर, श्री नीतीनभाई ठक्कर आदि हरिभक्तोंने प्रेरणारुप सेवा की। - राजुभाई ठक्कर

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

बड़े अंकेवालीया (ता. धांगधा) में कथा पारायण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के सां. कमलाबाई की प्रेरणा से गाँव के निष्ठावान ''सखीमंडल'' की बहनोने साथ मिलकर त्रिदिनात्मक भक्ति निधिपारायण का भव्य आयोजन ता. २९-१०-११ से ता. ३१-१०-११ तक किया गया। जिसमें सां. कोकिलाबाई (सुरेन्द्रनगर) ने सुमधुर शैली में कथामृत का पान करवाया। रात में सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए। सभा संचालन शा.उषाबहनने किया था। इस प्रसंग पर सांख्ययोगी बहने पधारी थी। पारायण के मुख्य यजमान कलमाबहन कांतिलाल पटेल आदि बहनोने सेवा में भाग लिया। - सखी मंडल बड़े अंकेवालीया

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वा. शा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से मंदिर में लक्ष्मीपूजन, शारदापूजन, हनुमानजी का पूजन तथा नूतन वर्ष के दिन अन्नकूट आदि उत्सव धूमधाम से मनाया गया।

नए वर्ष में मंगला आरती के दर्शन करने हरिभक्तों की भीड़ जमा हुई थी। मंगला आरती तथा अन्नकूट का दर्शन करके सभी सभा में पधारे जहाँ प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र पढ़ा गया। महंत स्वामी धर्मवल्लभदासजीने हरिभक्तों को आशीर्वाद देकर प.पू. महाराजश्री की आज्ञा में रहकर भक्ति करने का सूचन किया।

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नए संत स्वामी नीलकंठप्रसाददासजी गुरु स्वा. जीष्णुचरणदासजी तथा स्वामी शांतिप्रकाशदासजी का स्वागत किया गया। कार्तिक शुक्ल पक्ष-११ ता. ७-११-११ रविवार को भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया। जिसके यजमान प.भ. नविनभाई थे, अ.नि. प.भ. डॉ. दिनेशभाई तेवार परिवार, प.भ. भरतभाई तथा प.भ. कौशिकभाई पटेल थे।

- वसंत त्रिवेदी

आई.एस.एस.ओ. पियोरिया चेप्टर (यु.एस.ए.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से पियोरिया वेपर में प्रत्येक रविवार को नियमित सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है।

नूतन वर्ष में ठाकुरजी समक्ष हरिभक्त घर से बनाकर १०८ जितने भोग लगाकर अन्नकूट का आयोजन किया। फूट तथा फूल से भगवान को सजाया गया था। दूसरे दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का नूतन वर्ष आशीर्वाद पत्र पढा गया। फोन पर हरिनंदन स्वामीने कथा की थी. पू. ध्यानी स्वामी तथा पू. निर्गुण स्वामीने आशीर्वाद दिए।

- रमेश पटेल ह्युस्टन

ह्युस्टन टेकसास श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े

महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ह्युस्टन मंदिर में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

अक्टूबर महीने में प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से युवक मंडल की त्रिदिवसीय शिबिर का आयोजन किया गया । जिस में १०० बच्चों ने भाग लिया । **My Maharaj SHIBIR** के नाम से तीन दिन धर्म भक्ति के साथ ज्ञान प्राप्त किया गया । के.पी. स्वामी तथा डी.के. स्वामीने सुंदर आयोजन किया । अक्टूबर महीने में शिबिर, विजया दशमी को प.पू. महाराजश्री का जन्मोत्सव शरदोत्सव दीपावली उत्सव धूमधाम से मनाए गए । काली चतुर्दशी को श्री हनुमानजी का पूजन किया गया।

नूतन वर्ष के दिन प्रातः ६ से ११ तक अन्नकूट दर्शन हुए। तुलसी विवाह चार दिनों तक चला । जिस में उत्साही हरिभक्तों की सेवा तथा युवक युवती मंडल तथा कमेटी के सदस्य सुंदर साथ देकर प्रभु के आशीर्वाद प्राप्त किए।

- रमेश पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी

अमेरिका का आई.एस.एस.ओ. के प्रथम निमित्त श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से दीपोत्सव पर्व रविवार एकादशी को मनाया गया । शुक्रवार को पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार की उपस्थिति में महंत शा.स्वा. माधवदासजीने ठाकुरजी की आरती करके सभा में नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन का गान किया । महंत स्वामीने अपने प्रवचन में हमारे प्रत्येक उत्सवों का माहात्म्य कहा । दीपावली शारदा पूजन, नूतन वर्ष में गोवर्धन पूजा, अन्नकूट दर्शन आदि के दर्शन हरिभक्तों ने किए । सभी हरिभक्तों को प.भ. भक्तिभाईने आगामी उत्सवों की घोषणा की। - प्रविण शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से कोलोनीया मंदिर में अपने उत्सवो को धूमधाम से मनाया गया।

<u>विजया दशमी प.पू. महाराजश्री का ३९ वाँ पाटोत्सव</u>

श्रीहरि के ७ वें वंशज तथा हमारे प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३९ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर सभा में युवा हरिभक्तों ने सुंदर केक बनाकर महंत स्वामी के साथ बच्चों ने प्राकट्योत्सव मनाया । उसके बाद पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन पू. ज्ञान स्वामी के साथ यजमानश्रीने किया । महंत स्वामीने धर्मकुल महिमा माहात्म्य का वर्णन किया । अंत में ठाकुरजी का भोग-आरती करके सभी ने प्रसाद लिया।

<u>दिपोत्सवी पर्व</u>

मंदिर में एकादशी, धनतेरस, शारदा पूजन, हनुमानजी पूजन नूतन वर्ष के ठाकुरजी के समक्ष भव्य अन्नकूट मनाया गया । दीपावली को शयन संध्या आरती का दर्शन इस पश्चिम देश में कभी भी देखने को नही मिला । सुंदर दियों की सजावट की गई । नतून वर्ष में अन्नकूट का दर्शन हरिभक्तोंने किया।

<u>तुलसी विवाह</u>

कार्तिक शुक्ल पक्ष-११ प्रबोधिनी एकादशी को भव्य तुलसी विवाह मनाया गया । तुलसीजी को सुंदर सजाकर विवाह विधिकी गई । लग्नोत्सव के यजमान महेन्द्रभाई तथा जयाबहन सोलंकी के साथ सभीने समूह में रास-गरबा का आयोजन किया । श्री भरतभाई जानीने सुंदर विवाह विधिकरवाई । शा. ज्ञान स्वामीने तुलसीजी का तथा एकादशी का माहात्म्य कहा था। - प्रविण शाह

नोर्थ केरोलीन (यु.एस.ए.) में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से नवेम्बर के प्रथम सप्ताह में नोर्थ केरोलीन के निवासी (मूल माणसा-अहमदाबाद) प.भ. विष्णुभाई नारणदास पटेल के इस निवास स्थान में सुदंर सत्संग सभा में कथावार्ता, धून, कीर्तन तथा ठाकुरजी को भोग लगाकर आरती किया गया । प.भ. निरजभाई जोशीने पूजन विधिकी । ४० जितने भाविक भक्तोने लाभ लिया।

- सूजल वि. पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड यु.एस.ए.

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मंदिर में ता. ३-१०-११ रविवार को ठाकुरजी के समक्ष भव्य अन्नकूट मनाया गया । मुख्य यजमान मैत्रीभाई तथा रिद्धिबहन पटेल परिवार के साथ २० परिवारोने यजमान पद का लाभ लिया । ७०० से भी अधिक हरिभक्तो ने दर्शन का लाभ लिया । दीपावली के प्रसंग में श्री हनुमानजी का पूजन,

लक्ष्मीजी का पूजन, शारदा पूजन आदि विधिपूर्वक किया गया।

ता. ६-११-११ प्रबोधिनी एकादशी को ४ घंटे की अखंड धून तथा चार्तुमास के समापन हेतु पांच आरती की गई। ता. १३-११-११ रविवार को तुलसी विवाह का आयोजन किया गया। जिस में कृष्णपक्ष में राकेशभाई तेजलबहन पटेल तथा तुलसी पक्ष में प्रणवभाई मनाली बहन पटेल तथा मामा पक्ष में मुकेशभाई जयंती बहन पटेल यजमान बने थे। श्री आनंद उपाध्यायने संपूर्ण प्रसंग को विधिपूर्वक किया।

शा.स्वा. व्रजवल्लभदासजी तथा पुजारी हरिवल्लभदासजी की प्रेरणा से सत्संग की प्रवृति अच्छी चल रही है।

- प्रकाशभाई पटेल कलिवलेन्ड

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलबंस यु.एस.ए.

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति नियमित रुप से चल रही है।

हर दूसरे सप्ताह सभा का आयोजन भिन्न-भिन्न हरिभक्तों के घर किया जाता है। ५-११-११ शनिवार को दीपावली अन्नकूट उत्सव मनाया गया। कलिवलेन्ड मंदिर में पूजारी स्वामी हरिवल्लभदासजीने सुंदर कीर्तन भक्ति द्वारा तथा शा.स्वा. व्रजवल्लभदासजीने कथावार्ता की।

सभी स्थानिक परिवारों के सहयोग से सत्संग प्रवृति में प्रगति हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

- जयदीप पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.)
एटलान्टा में दीपावली तथा अन्नकूटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा. माधवजीवनदासजी तथा शा.स्वा. सत्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से तथा ट्रस्टी दक्षेशभाई पटेल तथा श्री राजुभाई पटेल के मार्गदर्शन अनुसार ता. २५-१०-११ को श्री कष्टभंजनदेव का पूजन, दीपावली को चोपड़ा पूजन, लक्ष्मीपूजन तथा ता. २७-१०-११ को अन्नकूटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। ता. ३०-१०-११ को भव्य अन्नकूट ठाकुरजी समक्ष लगाया गया।

प.पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र सभा में पढ़ा गया। १२ महीने की सभा हरिभक्तों की तरफ से की गई। श्री शैलेन्द्रभाई, श्री अरविंदभाई, श्री रश्मिभाई पटेल आदि हरिभक्तोंने युवक मंडल तथा महिला मंडल की बहनोने तन, मन, धन से सेवा की। सभा संचालन श्री घनश्यामभाईने किया। - अल्पेशभाई, भावेशभाई, विजयकुमार

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

विहार : प.भ. अमृतभाई माधवलाल पटेल ता. १९-१०-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

चींबा (ता. वढवाण) : प.भ. देवाभाई खोड़ाभाई गोहिल (हजुरी पार्षद वजेसंग भगत के पिताश्री) ता. ११-११-११ (उ.वर्ष ७४) शुक्रवार कार्तिक कृष्ण पक्ष-१ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद-बोपल : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.भ. गोविंदभाई बारसीया (पेईन्टर) के पिताश्री प.भ. हरदासभाई बारसीया (गुंदासरवाले) ता. ५-११-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

नडीयाद (अमेरिका) : प.भ. कनुभाई दवे ता. ४-११-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

नारायणपुरा (ता. कडी) : प.भ. महेन्द्रभाई मफतलाल पटेल की माताश्री प.भ. अमथीबहन ता. ६-११-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई।

नये वणझर : संप्रदाय के नए आश्रित तथा इस गाँव के मंदिर के पाटोत्सव के यजमान प.भ. मथुरदास प्रजापती ता. २०-११-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

Registered under RNI-GUJGUJ/2007/20221"Permitted to post at
Ahd PSO on 11th every month under postal REG. NO. GAMC.-003/9-11 issued SSP Ahd Valid
up to 31-12-2011 Licenced to Post without pre payment No. CPMG/GJ/01/07-08 valid up to 31/12/2011

૧. શ્રી સહજાનંદ ગુરુકુળ અસારવા ખાતે પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં વચનામૃત જ્ઞાન શિબિરમાં શ્રોતાઓને કથામૃતપાન કરાવતા પૂ. શા.સ્વામી નિર્ગુણદાસજી. ૨. સિનેમેન્સન, ક્લિવલેન્ડ અને શિકાગો શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં ભવ્ય તુલસી વિવાહ દર્શન. ૩. સીડની (ઓસ્ટ્રેલિયા) મંદિરમાં નૂતન વર્ષના ઠાકોરજીની અન્નકૂટની આરતી ઉતારતા શા. સ્વામી વિશ્વવિહારીદાસજી. ૪. બાયરન(અમેરિકા)મંદિરમાં દિવાળીના ભવ્ય અન્નકૂટ દર્શન. ૫. કોલંબસ (અમેરિકા) ચેપ્ટરમાં અન્નકૂટ દર્શન.

૧. કાંકરિયા મંદિરમાં લાભપાંચમના બાલસ્વરૂપ કષ્ટભંજન દેવનો અભિષેક કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને કાળીચોદશના મારૂતિ યજ્ઞની પૂર્ણાહુતિની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી સાથે સંત મંડળ અને હરિભક્તો. ૨. માંડલ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર શતાબ્દી પાટોત્સવ મહોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી અને શોભાયાત્રામાં દર્શન આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી. ૩. મુબારકપુર મંદિરના પ્રથમ પાટોત્સવ પ્રસંગે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની નિશ્રામાં કથા શ્રવણ કરાવતા પૂ. શા. રામસ્વામી અને સભા સંચાલન કરતા પૂ. પી.પી.સ્વામી (નાના) અને શાકોત્સવ કરતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી. ૪. ગવાડા મંદિરમાં પારાયણ પ્રસંગે વ્યાસપીઠની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી સાથે મહંત સ્વામી અને દેવ સ્વામી અને યજમાનશ્રીઓ વક્તા શ્રી પૂ. રામસ્વામીની આરતી ઉતારતાં.